अरुट्पेरुञ्जोति
तनिप्पेरुङ्करुणै

अरुट्पेरुञ्जोति
अरुट्पेरुञ्जोति

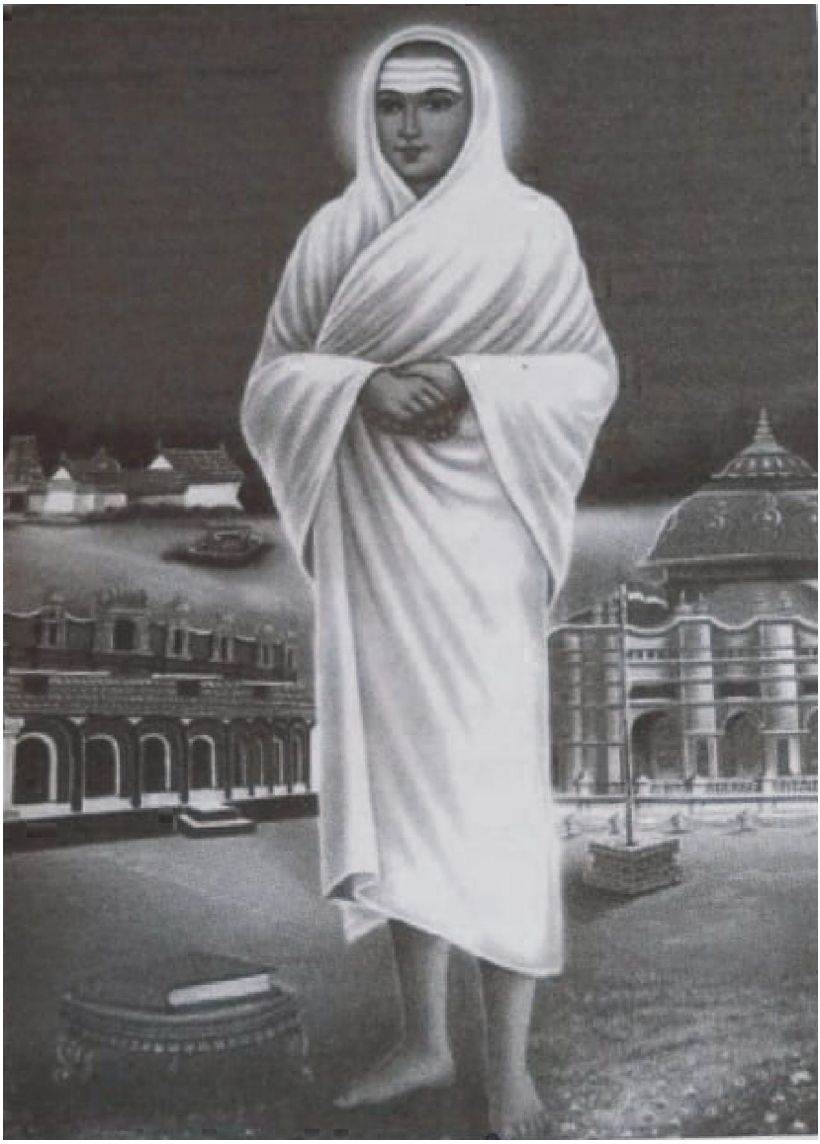

मृत्यु को जीते श्री अरुट्प्रकाश वल्ललार

अरुट्पेरुञ्जोति
तनिप्पेरुङ्करुणै

अरुट्पेरुञ्जोति
अरुट्पेरुञ्जोति

शिवमय
तिरुच्चिट्रम्बलम्
शुद्ध-सन्मार्ग का पहला साधन

जीवकारुण्य शीलता

JEEVAKARUNYA GOOD DISPOSITION

(HINDI)

ஜீவகாருணிய ஒழுக்கம்

(ஹிந்தியில்)

अनुवादक

श्री S.M.P. अरुलवासगम, B.A., (ESM.)

प्रकाशक

श्री अरुट्प्रकाश वल्ललार हिन्दी पुस्तक प्रकाशन ट्रस्ट

सेंबणारकोयिल-609 309

पुस्तक का नाम	:	जीवकारुण्य शीलता JEEVAKARUNYA GOOD DISPOSITION (HINDI) *ஜீவகாருணிய ஒழுக்கம் (ஹிந்தியில்)*
प्रथम संस्करण	:	25.05.2018
दूसरा संस्करण	:	05.10.2020
तीसरा संस्करण	:	05.10.2022 वल्ललार के 200 वर्ष के आगमन दिवस
अनुवादक	:	श्री S.M.P. अरुलवासगम, B.A., (ESM)
प्रकाशक	:	श्री अरुट्प्रकाश वल्ललार हिन्दी पुस्तक प्रकाशन ट्रस्ट श्रीमती ए. कलैच्चेल्वि अरुलवासगम डॉ.जी. शिवकुमार-अरुट्जोति जीवकारुण्य – पूर्वज वैद्यशाला, करुङ्कुषी-वडलूर श्री R. गणेशन - तिरुच्चि श्री S.R. कार्तिकेयन (U.S.A.) - Chennai.
सह अनुवादक	:	श्रीमती सुभाषिणी कुप्पुस्वामी, एम.ए. (हिन्दी)
पुस्तक के पन्ने	:	72
पुस्तक का मूल्य	:	₹ 40/-
मुद्रक	:	जे.एम. प्रिन्टर्स, चेन्नै
प्रकाशकीय हक	:	हिन्दी अनुवादक के अधीन है। इस ग्रंथ को अनुवादक के सिवा और कोई मुद्रण करने या प्रकाशित करने का अधिकार नहीं है।
पुस्तकें प्राप्ति-स्थान	:	S.M.P. अरुलवासगम, B.A., (ESM) 2/212ए, जोति नगर, नक्कीरर गली, सेंबणारकोयिल-609 309, मयिलाडुतुरै जिला तमिलनाडु, भारत, चलध्वनि : 97882 05853
कंप्यूटर टैप्पिंग	:	पी.वी.के. भवानी गंगाधर, तिरुवल्लूर, चेन्नै

अनुवादक की अन्य पुस्तकें :

1) महा उपदेश और प्रार्थनाएँ
2) राजा मनु की दृष्टि में नीति वाचक
3) छात्रों के लिए जीवकारुण्य
4) अरुट्पेरुञ्जोति अगवल (लिप्यंतर)
5) श्री अरुट्प्रकाश वळ्ळलार प्राप्त किये नित्य महा जीवितं
6) अनुग्रह नियति व अनुग्रह की सत्य वचन

अरुट्पेरुञ्ज्योति
तनिप्पेरुङ्करुणै

अरुट्पेरुञ्ज्योति
अरुट्पेरुञ्ज्योति

शिवमय
तिरुच्चिट्रम्बलम्
शुद्ध-सन्मार्ग का पहला साधन

जीवकारुण्य शीलता

JEEVAKARUNYA GOOD DISPOSITION

(HINDI)

ஜீவகாருணிய ஒழுக்கம்

(ஹிந்தியில்)

पहला भाग

जीवकारुण्य शीलता ही ईश्वर की आराधना होती है।

इस संसार में, मनुष्य-जन्म लिये हुए लोगों को अपने जन्म के द्वारा प्राप्त करनेवाले आत्मलाभ को, अपने जीवन-काल में ही जानकर प्राप्त करना चाहिए।

1. **वह आत्म लाभ क्या है? इसे जानना है तो –**

सारे ब्रह्माण्ड को, सारे भुवनों को, सभी चीजों को, सभी जीवों को, सभी शीलों को, सभी लाभों को अपने पूर्ण प्रकृति के स्पष्टीकरण के रूप की कृपाशक्ति से प्रकट होकर, समझने और समझानेवाले, प्रकृति के सत्य स्वरूपवाले 'ईश्वर' के पूर्ण प्रकृति आनन्द पाकर,

हमें इस सत्य को जानना चाहिए कि किसी भी काल में, किसी भी स्थान पर, किसी भी तरह, कितने भी हों, बिना रुकावट के जीनेवाले एक अनुपम उन्नत जीवन ही मनुष्य जन्म के द्वारा प्राप्त करानेवाले आत्म लाभ है।

2. **प्राकृतिक आनन्द पाकर, रुकावट के बिना जीनेवाले उस उत्तम जीवन को हम कैसे प्राप्त करें? यदि इसे जानना है तो.....**

इसे जानना चाहिए कि ईश्वर के प्राकृतिक स्पष्टीकरणवाली कृपा के द्वारा ही प्राप्त कर सकेंगे।

3. **ईश्वर के प्राकृतिक स्पष्टीकरणवाली कृपा को कैसे प्राप्त कर सकेंगे? यदि इसे जानना है तो–**

हमें इस बात को बड़ी दृढ़ता से समझना चाहिए कि जीवकारुण्य सदाचार से ही ईश्वर की कृपा को हम पा सकते हैं। अन्यथा और किसी भी मार्ग से जरा भी प्राप्त नहीं हो सकता।

4. **जीवकारुण्य के सदाचार से ही ईश्वर की कृपा पा सकते हैं अन्यथा और किसी भी मार्ग से यह प्राप्त नहीं होगा। यह कैसे संभव हो सकता है? ऐसे सोचने पर**

कृपा का अर्थ - ईश्वर की दया और ईश्वर के प्राकृतिक स्पष्टीकरण है। जीवकारुण्य का अर्थ जीवों की दया और जीवों के आत्म प्राकृतिक स्पष्टीकरण होता है। इसलिए दया से दया लेकर स्पष्टीकरण से ही स्पष्टीकरण को प्राप्त करना होगा। और अन्य किसी भी चीज़ से न मिलनेवाले इस अनुभव से हमें यह जानना चाहिए कि जीवकारुण्य से ही कृपा को पा सकेंगे और किसी भी चीज से यह नहीं मिल सकता। यह तो स्पष्ट रूप से प्रकट होने के कारण इसके लिए और कोई प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती।

कृपा पाने के लिए केवल जीवकारुण्य ही एकमात्र मार्ग होने के कारण हमें यह जानना होगा कि यह ज्ञान मार्ग और सन्मार्ग, जीवकारुण्य शील होता है और अज्ञान मार्ग, दुन्मार्ग आदि जीवकारुण्य दुराचार ही होता है।

जीवकारुण्य प्रकट होने पर, उसके साथ बुद्धि और प्रेम भी प्रकट होंगे। इससे उपकार शक्ति प्रकट होती है; उपकार शक्ति से सभी प्रकार की भलाइयाँ होंगी।

जीवकारुण्य का लुप्त होने पर बुद्धि और प्रेम भी तुरंत लुप्त हो जाते हैं। इससे उपकार शक्ति भी लुप्त हो जाती है; उपकार शक्ति के निकल जाने पर सभी बुराइयाँ खड़ी हो जाती हैं।

इसलिए हमें ऐसे समझना चाहिए कि पुण्य का अर्थ तो - एकमात्र जीवकारुण्य ही होता है और पाप का अर्थ तो - एकमात्र जीवकारुण्य के रहित आचरण ही होता है।

इसे सच्चाई से जानना चाहिए कि जीवकारुण्य शीलता से आनेवाला स्पष्टीकरण ही ईश्वर का स्पष्टीकरण और जीवकारुण्य शीलता से आनेवाला आनन्द ही ईश्वरीय आनन्द होते हैं; और इस स्पष्टीकरण और इस आनन्द को चिरकाल से देखकर अनुभव करके परिपूर्णता को प्राप्त किये हुए साध्य लोग ही जीवनमुक्त होते हैं और वे ही ईश्वर को अपने ज्ञान से समझकर ईश्वरमय हो जायेंगे।

5. लेकिन यह जीवकारुण्यशीलता क्या होती है? -यदि इसका विचार करें तो-

इसका उत्तर यही समझना चाहिए कि जीवों को जीवों से सम्बन्धित विषयों से होनेवाली आत्म-सहानुभूति के साथ दैविक आराधना करके जीवन बिताना ही है।

6. जीवों से सम्बन्धित विषयों पर आत्म-सहानुभूति कब प्रकट होगी? यों पूछें तो-

हमें यह जानना होगा कि भूख, प्यास, रोग, इच्छा, दीनता, भय, हत्या आदि बातों से दुख का अनुभव करनेवाले जीवों को देखने पर या इन बातों को सुनने पर या ऐसे होने की संभावना की जानकारी होनेपर आत्म-सहानुभूति प्रकट होगी।

7. जीवकारुण्य के अधिकारी कौन हो सकते हैं? ऐसा पूछने पर-

एक ही स्वभाव के प्राकृतिक सत्य के सार्वभौमिक रूप में सर्वशक्तिमान होनेवाले ईश्वर के द्वारा सृष्टि किये जाने के कारण सभी जीव आपस में अधिकार प्राप्त भाई ही होंगे। भाईयों में से कोई एक आफत के कारण दुखी होने पर और दुखी होंगे ऐसी बात को यदि जानने पर उसे अपने भाई ही तो है– इसे देखने पर, दूसरे भाई को सहानुभूति होना एक भाई का अधिकार ही होता है। इसलिए एक जीव के दुख के अनुभव को देखने पर और, दुखी होगा ऐसा जानने पर, दूसरे जीव को सहानुभूति होती तो इसे पुराने आत्म अधिकार के रूप में ही जानना होगा।

8. जीवों को दुखी होते देखने पर भी, कुछ लोग जीवकारुण्य के बिना कठोर चित्तवाले होते हैं; इनको यह भाईचारे का अधिकार न होने का क्या कारण है? ऐसा पूछने पर -

दुखी होनेवालों को अपने भाई समझकर और अपना भाई दुख से पीडित होता है आदि बातों को समझने के योग्य आत्म ज्ञान का नेत्र, अज्ञान के रोग से प्रकाश धीमी होकर, उनकी सहायता करनेवाला मन जैसे उपनयनों रूपी आइने भी प्रकाश को प्रतिफलित न करते हुए मोटी होने के कारण इसे न देख पा सके। इसलिए भाईचारे का अधिकार होने पर भी जीवकारुण्य की भावना न हुई है। ऐसा जानना है। इसलिए जीवकारुण्यवाले लोग आत्म दृष्टि के विवरण का ज्ञान होनेवाले होते हैं - ऐसा जानना चाहिए।।

9. जीवों को भूख, प्यास, भय आदियों से होनेवाली सभी यातनाएँ केवल मन, नेत्र आदि कर्णेन्द्रियों के ही अनुभव होते हैं न कि आत्मा का अनुभव। इसलिए जीवकारुण्य को अपनाने में कोई विशेष प्रयोजन तो है नहीं, यदि ऐसा पूछें तो –

इस स्थूल देह के अन्दर जीव के रूप में विद्यमान होनेवाली आत्मा और ज्ञान के भी ज्ञान के रूप में रहनेवाले ईश्वरीय प्राकृतिक स्पष्टीकरण के अलावा, करण, इन्द्रिय आदि अन्य सभी चीजें करणों के रूप के जड़तत्व ही होते हैं न कि चेतना वस्तुएँ। इसलिए जड़ (अचेतन) वस्तुएँ सुख, दुखों के अनुभवों को नहीं जानती। लाल मिट्टी खुश हुई, दुख हुई, ऐसा हम नहीं कहते। उसी प्रकार मन खुश हुआ, दुखी हुआ ऐसा भी नहीं कहा जाएगा। जिस प्रकार अपने शरीर के जीवन के लिए मिट्टी से घर बना लेते हैं, ठीक उसी प्रकार मन आदि करणेन्द्रियों से जीवों को अपने जीवन बिताने के लिए ईश्वर के द्वारा बनाकर दी गयी यह देह एक छोटा सा घर है। सुख-दुखों को घर में रहनेवाला ही अनुभव करेगा न कि घर अनुभव करता। इसके अलावा धूल से धूसरित होने से प्रकाश में धुँधलापन आकर उपनयन के रूप में रहनेवाली चश्मे की सहायता से देखनेवाली आँखें, दुखित विषय को देखकर आँसू बहायेंगी न कि चश्मा। इसलिए आत्म दृष्टि के उपनयन के रूप में रहनेवाले मन आदि उपकरण सुख और दुखों का अनुभव नहीं करेंगे। हमें यह जानना होगा कि आत्मा ही इसका अनुभव करती है।

10. किसी एक जीव को सुख घटित होने पर मन खुश होता है; दुख घटित होने पर मन शिथिल हो जाता है; इसलिए क्या ऐसा ही न जानना होगा कि मन ही सुख और दुखों का अनुभव करेगा? ऐसा कहने पर -

ऐसा न जानना होगा। स्फटिक से बनाये गये घर के मालिक के शरीर के अवयव और शरीर की थकावट, उस स्फटिक के घर पर प्रतिफलित होकर जैसे बाहर दिखायी देती हैं और जैसे आँखों की प्रफुल्लता और थकावट तो आँखों पर रहनेवाले उपनयनों पर प्रतिफलित होकर बाहर दिखायी देती हैं। उसी प्रकार सुख-दुखों से

आत्मा को होनेवाली प्रसन्नता और शिथिलता मन आदि करणेन्द्रियों पर प्रतिफलित होकर बाहर दिखाई देती हैं। इसलिए हमें ऐसा जानना होगा कि सुख-दुखों का अनुभव तो आत्मा को ही होता है और सुख दुख को जानकर अनुभव करने के लिए करणेन्द्रियाँ आत्मा के सहायक उपकरण ही होते हैं।

11. ईश्वर की सृष्टि के जीवों में कई लोग भूख, प्यास, भय आदि से बहुत दुखी होते हैं। ऐसा क्यों होता है? ऐसा प्रश्न करें तो-

इसके उत्तर में हमें यही जानना चाहिए कि पिछले देह में जीवकारुण्यशीलता की इच्छा न रखते हुए कठोर चित्तवाले होकर, दुश्चरित मार्ग पर चले हुए जीव होने के कारण, ईश्वर से विधित कारुणिक आज्ञानुसार भूख, प्यास, भय आदियों से अधिक दुखी होते हैं।

12. हम इसे कैसे जान सकते हैं कि पूर्व की देह होती है? ऐसा पूछने पर -

किराये पर किसी एक घर में रहनेवाले एक गृहस्थ, उसके पहले किस अन्य घर में, किराये देकर रहा होगा अन्यथा किसी घर के बिना वह तो घर बसाया नहीं होगा। और अब रहनेवाले घर में भी कोई कलह की संभावना होने पर, फिर से और दूसरे घर पर वास करने के लिए चला जायेगा। ठीक इसी प्रकार हमें यह जानना चाहिए कि इस शरीर के आहार के रूप में किराया देकर रहनेवाले जीव तो, इसके पहले भी किसी अन्य शरीर पर, ऐसे ही किराये देकर जीवित हुआ था और ऐसा तो नहीं होगा कि देह के बिना जीवित रहा हो। इस शरीर पर यदि किसी कलह का सामना करना पड़े तो और किसी अन्य शरीर पर बसने के लिए चला जायेगा। इसलिए हमें यह जानना चाहिए कि जीवों को पिछले और बाद में भी किसी एक देह पर रहना ही होगा।

13. पिछले देह पर रहते समय किये गये पाप-कर्म इस देह में भी आते हैं? यह कैसे? ऐसा पूछें तो -

कोई एक गृहस्थ पहले जिस घर में किराये देकर निवास करता था, वहाँ अपने मालिक की आज्ञा का पालन न करते हुए दुराचारवाले लोगों को अपने घर में बुलाकर उनके साथ मिलजुलकर सहवास किये हुए होने पर, फिर वह गृहस्थ उस घर को छोड़कर दुसरे घर में निवास करेगा तो वे दुराचारी लोग यहाँ भी आकर उसके साथ रिश्ता रखेंगे। इसी प्रकार कोई एक जीव पहले देह पर रहते समय, ईश्वर की आज्ञा के अनुसार न चलकर यदि दुन्मार्ग से (बुरे मार्ग से) पाप कर्मों को इच्छित होकर किये गये होते तो वह जीव दूसरे देह पर आने पर भी उसके पाप कर्म भी अब के देह में भी आकर जीव के साथ सम्मिलित होगा। ऐसे जानना चाहिए।

14. पिछले जन्म पर जीवकारुण्य शीलता को छोड़कर बुरे मार्ग पर चले जीव, इस जन्म पर भूख, प्यास, भय आदि से दुखी होने की स्थिति तो ईश्वर के अनुग्रह की नियती होने पर उन जीवों के विषय में, कारुण्य दिखाकर आहारादि देकर उनके दुख को दूर करना तो क्या ईश्वर के अनुग्रह के विरुद्ध तो नहीं होगा? ऐसा कहने पर-

नहीं होगा। राजा की आज्ञा का विरोध करके अपने पैरों पर बेडी लगाकर कारागार में रहनेवाले बड़े से बड़े अपराधियों को राजा अपने सेवकों के द्वारा आहार दिलाता है। उसी तरह ईश्वर, अपनी आज्ञा को पूरी तरह से विरोध करके, कई तरह के बन्धनों में पड़कर नरक में रहनेवाले पापियों को भी अपने परिवार-देवताओं के द्वारा आहार दिलाते हैं। राजा, अपनी आज्ञा के अनुसार न चलकर, इससे भी भिन्न साधारण अपराध किये हुए लोगों को अपने से पानेवाले लाभ को न मिलने देकर, नौकरी से निकालकर उनको अच्छी बुद्धि दिलाने के

उद्देश्य से उस स्थान से और किसी दूसरे स्थान को भेज देता है। अपनी नौकरी निकल जाने के कारण वे लोग सुख भोजन आदि सुविधाओं को खोकर अपने नगर के बाहर जाकर आहारादि के लिए घूमते फिरते दुखी होते समय, दयावान लोग उन्हें देखकर आहार आदि देते हैं। इस बात को राजा सुनने पर या देखने पर दान देनेवालों को दयालु गृहस्थ के रूप में मानकर खुश ही तो होगा; न कि नाराज होगा।

उसी प्रकार ईश्वर अपनी आज्ञा के अनुसार न चलनेवाले साधारण अपराधी जीवों को अपनी शक्ति से, उनके पानेवाले सुखों को पाने न देकर, अपने द्वारा दिये हुए सांसारिक सुख-भोगों को छुड़ाकर, उन जीवों को अच्छी बुद्धि दिलाने की दृष्टि से उस देह से निकालकर दूसरी देह पर बसाते हैं। वे जीव सांसारिक सुख-भोगों को खो जाने के कारण, सुख-भोजनादि को भी खोकर अन्यान्य स्थानों पर आहार आदि न पाकर दुखी होते समय, कोई दयालु लोग उसके दुख को देखकर आहार आदि देने से, इस प्रकार दिये हुए लोगों को बड़े दयालु मानकर "ये लोग क्रमशः सुख प्राप्त करें!" ऐसा खुश होकर उन्हें प्रोत्साहन ही तो करेंगे न कि नाराज होंगे। इसलिए हमें इस सत्य को जानना चाहिए कि जीवों पर जीवकारुण्य दिखाना ही ईश्वर के अनुग्रह की आज्ञा की भी स्वीकृति होती है।

15. इस जीवकारुण्य से इस संसार की शीलता प्रकटित होती है। जीवकारुण्य न होने पर इस संसार की शीलता जरा भी न प्रकटित होगी यह कैसे? ऐसे पूछने पर -

जीवकारुण्य न रहनेपर बुद्धि और प्रेम उत्पन्न नहीं होंगे; उनके उत्पन्न न होनेपर दृष्टिकोण और लगन और उपकार आदि भी न प्रकट होंगे। उनके प्रकट न होने पर बलवान जीवों से निर्बल जीवों की शीलता तो ईर्ष्या आदि गुणों से भंग होकर नाश हो जायेगा। बलवान जीवों की शीलता तो तामस शीलता के रूप में बदलकर एक व्यक्ति की

शीलता से दूसरों की शीलता घमंड के कारण शिथिल होकर विपरीत रूप में नष्ट हो जीयेगी। जीवकारुण्यशीलता के जरा भी न रहनेवाले जंगल में, इस संसार की शीलता तो प्रकटित होती ही नहीं। उसी प्रकार जीवकारुण्यता न होनेवाले मनुष्यों के बीच में भी इस संसार की शीलता प्रकटित नहीं होगी। ऐसा समझना होगा।

16. परलोक की शीलता, जीवकारुण्य से प्रकटित होती है, और वह न होने पर परलोक की शीलता भी प्रकटित नहीं होगी यह कैसे? ऐसे पूछने पर

जीवकारुण्य के न होने पर, अनुग्रह के स्पष्टीकरण का उदय नहीं होगा। उसका उदय न होने पर, ईश्वरीय मोक्ष की प्राप्ति नहीं हो सकती। उसकी प्राप्ति न होने पर, मुक्ति के सुख का अनुभव तो कोई भी न पा सकता। इसकी प्राप्ति न होने के कारण परलोक की शीलता की भी प्राप्ति नहीं होगी ऐसे जानना होगा।

17. जीवकारुण्य शीलता का अधिक प्रकटित न होने के कारण बुरे मार्ग का जन्म ही अधिक होकर सर्वत्र दुराचार ही प्रकटित हैं। यह कैसे?

जीवकारुण्य रहित कठोर चित्तवाले लोग अपने अपने कठोर कार्यों के अनुसार, कुछ लोग नरकवासी होते हैं और कुछ लोग समुद्रवासी हो जाते हैं और कुछ लोग अरण्यवासी होकर, कुछ लोग बाघ, भालू, शेर, याळी, (सिंह मुखवाला एक जानवर) हाथी, बकरा, भैंसा, सुअर, कुत्ता, बिल्ली आदि दुष्ट जानवर होकर, कुछ लोग सर्प, बिच्छ आदि विष-जन्तु होकर, कुछ लोग मगर, सुरा (एक प्रकार की समुद्र मछली) आदि कठोर जन्तु होकर और कुछ लोग कौआ, गिद्ध आदि पक्षी के रूप में चंडाल होकर और कुछ लोग कुचिला, (इन्ट्रायण-एक प्रकार की कडुवी सब्जी) नागफली (एक कंटक पौधा)

थूहर आदि अशुद्ध वनस्पतियाँ होकर जन्म लिये हुए हैं। इसलिए दुराचारें ही अधिक प्रचलित होते हैं- ऐसा जानना चाहिए।

हमें ऐसा समझना चाहिए कि ईश्वर का अनुग्रह पाने के लिए जीवकारुण्य एक मुख्य साधन होने के साथ ही साथ, वही उस अनुग्रह के स्पष्टीकरण होता है। जीवकारुण्य तो आत्माओं का प्राकृतिक स्पष्टीकरण होता है। इसलिए उस प्रकृतिक स्पष्टीकरण के बिना रहनेवाले जीवों को ईश्वर का स्पष्टीकरण मन के अन्दर और बाहर प्रकटित तो नहीं होगा।

18. जीवकारुण्य का मुख्य लक्ष्य क्या होता है?

सारी आत्माएँ, प्राकृतिक सच्चाई के सार्वभौमिक रूप में होकर प्राकृतिक स्पष्टीकरण की कृपा बुद्धि की भी बुद्धि के रूप में प्रकटित होने के लिए, एकता के अधिकार के स्थानों के रूप में होती हैं और वे आत्माएँ जीव होकर अधिक विस्तृत होने के लिए भूत-कार्य देहों का ही आधिपत्य होता है। उन देहों पर आत्माएँ जीवों के रूप में होकर विस्तृत न होंगी तो आत्माओं का स्पष्टीकरण लुप्त हो जायेगा और उसके कारण ईश्वर के अनुग्रह का स्पष्टीकरण प्रकट नहीं होगा और तब स्तब्ध हो जायेगा और वही आत्माओं का बन्धन हो जायेगा और इसीलिए भूतकार्य देह की आवश्यकता पड़ती है और भूत कार्य देहों का मूल कारण माया होने से, उस माया के विकल्प जादुओं के रूप में होनेवाले भूख, प्यास, रोग, इच्छा, दीनता, भय, हत्या आदियों से उन देहों को बार-बार आफतों का सामना करना पड़ता है। और आफतों के न घटने की दृष्टि से, कर्णेन्द्रियों की सहायताओं को पायी बुद्धि के सहारे बड़ी सावधानी के साथ प्रयास करके इन्हें रोकने के लिए उचित अल्प स्वतंत्रता तो जीवों को ईश्वरीय अनुग्रह से दी गयी है और उस स्वतंत्रता को लेकर सभी जीव अपने देहों से आफतों को हटाकर

आत्मलाभ प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करना पड़ेगा और प्रारब्ध के कारण से और असावधानी के कारण से भूख, प्यास, रोग, इच्छा, दीनता, भय, हत्या आदि बातों से होनेवाली आफतों की निवृत्ति न कर सकने की स्थिति में, दुखी होनेवाले जीवों के विषय में उनकी निवृत्ति करने योग्य स्वतंत्रता रखनेवाले जीव तो कारुण्य से निवृत्ति करना चाहिए और

अपर जीवकारुण्य

उस प्रकार निवृत्ति लाने में, भूख से आनेवाले दुख और हत्या से होनेवाले दुखों के सिवा अन्य विषयों से आनेवाले दुखों को बदलाना अपर जीवकारुण्य होता है। इसलिए यह तो केवल संसार के सुख को ही थोड़ा सा प्राप्त करवाता है और

पर जीवकारुण्य

भूख से आनेवाले दुखों की और हत्या से आनेवाले दुखों की निवृत्ति करवाना ही पर जीवकारुण्य होता है। इसलिए इस संसार के सुखों को और असीमित सिद्धि के सुखों को और किसी भी काल में न मिटनेवाली मुक्ति का आनन्द भी अनुग्रह के द्वारा प्राप्त हो सकता है और प्रारब्ध के कारण और असावधानी से, अन्य जीवों को होनेवाली आपदाओं की निवृत्ति कराने के योग्य स्वतंत्रता और ज्ञान होने पर भी वैसे न करके वंचित करनेवालों को इस संसार के सुख के साथ मोक्ष के आनन्द का अनुभव करने की स्वतंत्रता तो अनुग्रह के द्वारा नहीं प्राप्त होगा और वर्तमान काल में अनुभव करनेवाले सुख-भोग की स्वतंत्रताओं को भी खो देंगे और ईश्वर के द्वारा वेदों पर विधित होने के कारण प्रारब्ध और असावधानी से भूख, हत्या आदि से आनेवाली आपदाओं की निवृत्ति करने योग्य ज्ञान और स्वतंत्रता न रखनेवाले जीवों के विषय में उनकी निवृत्ति कराने के योग्य ज्ञान और स्वतंत्रता

रखनेवाले जीवों को वंचित न करते, दया से निवृत्ति करवाना ही जीवकारुण्य का मुख्य लक्ष्य होता है और उसमें सच्चा विश्वास रखकर, भूखे जीवों को आहार से भूख मिटाकर और हत्या किये जानेवाले जीवों का, करने योग्य कार्य से हत्या से बचाकर तृप्ति के सुख को उत्पन्न करना ही उत्तम प्रयोजन होता है ऐसा जानना चाहिए।

19. भूख, हत्या, प्यास, रोग, इच्छा, दीनता, भय आदि बातों से आनेवाली आपदाओं की निवृत्ति कराने की विधि होने पर भी, यहाँ केवल भूख से और हत्या से आनेवाली आपदाओं की निवृत्ति कराने को ही अधिक विशेष रूप में क्यों बताया जाता है? इसे जानने के लिए-

जीवकारुण्य शीलता में तो अपर जीवकारुण्य और पर जीवकारुण्य के नाम से दो प्रकार के होते हैं। उनमें भूख मिटाना और हत्या को हटाना पर जीवकारुण्य होने के कारण, इसे विशेष रूप में बताया गया है। ऐसा समझना चाहिए।

प्यास

इसके अतिरिक्त, भूख से दुखी होनेवाले जीवों की भूख की निवृत्ति करानेवाले दयावान लोग तो, प्यास बुझाने के लिए पानी दिये बिना नहीं रहेंगे। पानी देना तो कोई प्रयास का कार्य भी नहीं होता। पानी तो झील तालाब नहर आदि स्थानों पर भी प्राप्त हो सकता है। प्यास बुझाने के लिए इन उपायों की सहायता लेने में ही तो कष्ट होगा। बल्कि इसमें देह को कोई हानी नहीं होगी। भूख मिटाने के लिए कोई अन्य उपाय चुनने में देह को कष्ट उठाना पड़ता है।

रोग

भूख से आनेवाले दुख की निवृत्ति करवाने के योग्य दया रखनेवाले लोग, रोग से आनेवाले दुख की निवृत्ति कराने में दया किये बिन नहीं रह सकते। भूख की अधिकता के कारण ही रोगों की वृद्धि होती है। आहार के पकवानें से ही वे रोग दूर हो जाते हैं। रोग मिटाने के लिए और अन्य दवा देने पर भी मित-आहार ही देह की स्थिर स्थिति के लिए आवश्यक आधार होता है। रोग के साथ देह को कई दिन तक रख सकते हैं मगर एक दिन भी आहार के बिना देह को रखना नहीं चाहिए।

इच्छा

भूखे लोगों को आहार से भूख मिटाने की दया रखनेवाले लोगों को, इच्छा से होनेवाले दुखों को दूर करने की दया आते बिना नहीं होगी। जीवों को इस प्रकार भूख लगने पर आहार के सिवा अन्य किसी भी विषयों की इच्छा नहीं होगी। आहार मिलने पर, अपनी भूख मिट जाने पर, अपनी इच्छा को, अपने थोड़े से प्रयत्न से भी वे उनकी पूर्ति कर सकते हैं या समाधान भी कर लेंगे। इच्छा रखते हुए कई दिन तक देह टिक सकती है पर भूख के साथ एक दिन भी देह को नहीं रख सकते हैं।

दीनता

भूखे जीवों को आहार से भूख की निवृत्ति करानेवाली दया रखनेवाले लोगों को अस्वतन्त्र जीवों की दीनता के निवारण कराने की दया आते बिना नहीं होगी। भूख से दुखी होनेवाली दीनता से बढ़कर और कोई दीनता है ही नहीं। दीनता को तो कुछ दिनों के बाद बदला सकते हैं। पर भूख को ऐसे बदला नहीं जा सकता। दीनता के साथ देह टिक सकती है। मगर भूख से नहीं रख सकते हैं।

भय

भूख की निवृत्ति करानेवाली दया रखनेवाले लोगों को भय की निवृत्ति कराने में दया आते बिना नहीं होगी। भूख के कारण आनेवाला भय और हत्या के कारण आनेवाले भय से बढ़कर दूसरा कोई भय ही नहीं हो सकता। भय को तो किसी उपाय से दूर कर सकते हैं। भूख को उपाय से दूर नहीं कर सकते। भय के साथ देह तो जीवित रह सकती है; पर भूख से जीवित नहीं रह सकती। भूख से आनेवाली वेदना और दुख; हत्या से आनेवाली वेदना और दुख अपने-आप में समान होते हैं। इसलिए भूख से आनेवाले दुख और हत्या से आनेवाले दुख की निवृत्ति करवाना ही जीवकारुण्य का मुख्य लक्ष्य होता है ऐसा जानना चाहिए।

20. भूख से आनेवाले दुख को दूर करना और हत्या से आनेवाले दुख को दूर करना आदि बातें ही जीवकारुण्य का मुख्य लक्ष्य होने पर, यहाँ भूख मिटाने मात्र को बार-बार जोर देकर क्यों बताया जाता है? ऐसा पूछने पर-

कोई एक जीव भूख के कारण मारे जाने की बात जानकर कारुण्य के साथ भूख मिटाकर उसके जान बचाने का कार्य करनेवाले, और किसी भी तरह से जीवहत्या का सम्भव होने पर उसके लिए दया दिखाते हुए उस हत्या से आनेवाले दुख की निवृत्ति किये बिना नहीं रह सकते। हत्या से आनेवाले दुख की निवृत्ति न करनेवाले लोग भूख से आनेवाले दुख की भी निवृत्ति कराने में योग्य दया रखनेवाले नहीं होंगे। भूख के कारण आनेवाली हत्या को आहार के सिवा, और किसी भी तरह से निवृत्ति नहीं की जा सकती है। वैरी भाव आदि से आनेवाली हत्या को कई उपायों से निवृत्ति की जा सकती है। इसलिए भूख से आनेवाले दुख को बार-बार जोर देकर कहा जाता है - ऐसा जानना चाहिए।

इसके अलावा, प्यास के कारण दुखी होनेवाले और रोग से पीड़ित लोग और इच्छा के कारण दुखी लोग और दीनता से दुखी लोग और भय के कारण दुखी लोग, भूख की वेदना होते समय उन सभी दुखों को भूलकर भूख का दुख ही तीव्र होकर आहार की खोज में प्रयास करते हैं।

इसके अलावा राजा की आज्ञा से, हत्या के अपराध के लिए मृत्यु-दंड विधित हुए एक खूनी भी, भूख से तड़पते समय अपने भय और अपने दुख को भूलकर, भूख को मिटाने का प्रयत्न करता है।

एक रोगी और एक बूढे व्यक्ति जिनको अपने वैद्य से यह बात जानना पड़े कि उनकी मृत्यु निश्चित है तो भी, उन्हें भूख लगने पर अपने दुख को भूलकर भूख मिटाने का ही प्रयास करते हैं।

दया से भूखे लोगों को आहार देने का साहस रखनेवाला और कोई अन्य रीतियों से जीवों की हिंसा होकर नष्ट होने का स्वीकार नहीं करेगा। इसलिए भूख से आनेवाले दुख की निवृत्ति करानेवाले धर्म को बार-बार जोर दिये जाते हैं। इस बात को ऐसे जानना चाहिए।

21. **भूख से आनेवाली विपत्ति, सभी जीवों की देहों का नाश किये जाने की बात सत्य होने पर सभी जीवों की भूख को जानकर, निवृत्ति कराना चाहिए। इस प्रकार निवृत्ति करवाने की शुरुआत कर दें तो ईश्वर की सृष्टि के देव, मनुष्य, नरकवासी, पशु, पक्षी, रेंगनेवाले प्राणी, वनस्पति आदि इन सात प्रकार के असंक्य भेदोंवाले जीवों की भूख को जानकर, दूर करना तो क्या असाध्य ही तो होगा? यों प्रश्न उठायें तो–**

देव : मनुष्य के स्वतंत्र से भी बढ़कर अधिक स्वतंत्र रहनेवाले लोग, अपने को घटित होनेवाली भूख को अपने प्रयत्न से ही परिवर्तित करने की ताकत रखनेवाले होते हैं। इसलिए उनकी भूख के बारे में,

दूसरे लोग सोचने की आवश्यकता नहीं है और देवों को भी भूख लगने पर दुख होगा। ऐसी दया करना मात्र ही आवश्यक है और

नरकवासी : भूख की निवृत्ति करने के योग्य स्थानों पर न रहकर, अन्य स्थानों पर रहने के कारण, नरकवासियों की भूख, दंड देनेवाले परिवार जनों के द्वारा मिटाये जाने के कारण उन नरकवासियों की भूख के सम्बन्ध में सोचने की आवश्यकता नहीं है और उन नरकवासियों को भूख लगने पर वे दुखी होंगे ऐसे दया करना मात्र ही आवश्यक है। और

प्रारब्ध से जरा भी स्वतंत्र न रहनेवाले वृक्ष, घास आदि वनस्पतियों में मनुष्य अपने जीवन की सहायता की दृष्टि से, अपने प्रयत्न से पैदा करनेवाले वनस्पति वर्गों की भूख मिटाने के लिए पानी देना आवश्यक होता है और अन्य वनस्पति वर्ग तो ईश्वरीय कृपा नियती से आहार दिलाकर जीवित रहते हैं। इसलिए उन सबकी भूख जानकर आहार देना अपनी स्वतंत्रता नहीं बल्कि वह ईश्वर की स्वतंत्रता है और उसके लिए सोचना तो आवश्यक नहीं है और आहार न मिलने पर वे दुखी होंगे ऐसा सोचकर दया करना मात्र आवश्यक है। और

ज़मीन पर और पानी में रंगनेवाले जीवों को और पक्षियों को और जानवरों को अपने-अपने प्रारब्ध के तरीकों के अनुसार ईश्वरीय कृपा की नियति से आहार दिलाते हुए खाकर अपनी भूख मिटा लेते हैं और उन उनके योग्य आहार के बारे में जानकर देने में तो हमारी स्वतंत्रता नहीं रहती है। वह तो ईश्वर की स्वतंत्रता होती है। उनमें मनुष्य की सहायता के रूप में, अपनी स्वतंत्रता से पानेवाले गाय, बैल, भैंस, भैंसा, बकरी, घोड़ा आदि कुछ जानवरों को आहार देकर भूख मिटाना तो आवश्यक होता है। और

मनुष्यों में पुरुष, स्त्री आदि दो प्रकार के सभी मनुष्यों को भूख से आनेवाले नष्ट और दुख, भूख निवृत्ति से आनेवाले लाभ और सुख सामान्य रूप से समान ही रहने के कारण और भूख से आनेवाले नष्ट और दुख मन आदि अंतःकरण वृत्ति और आँख आदि इन्द्रियों से अधिक जानकारी करनेवाले आत्मज्ञान समान होने के कारण और मनुष्यों को प्रारब्ध से, ईश्वरीय कृपा की नियति से दिये जानेवाले आहार मात्र से जीवित होकर, देह का पालन करना असंभव होने के कारण और अपने प्रयास से और अपनी बुद्धि से और अपनी स्वतंत्रता से कमानेवाले आगामीय आहार से भूख की निवृत्ति करके, देह का पालन करना चाहिए। इसलिए आगामीय से कमानेवाले जीव की स्वतंत्रता, मनुष्यों को ईश्वरीय कृपा से अधिक दिये जाने के कारण और प्रारब्ध से आहार प्राप्त न होकर भूख लगकर दुखी होने और उस भूख को मिटाने के लिए एक दूसरे की प्रतीक्षा करने की स्थिति में पड़कर उनकी कृपा से आहार देकर उस भूख को मिटाकर उन्हें अपने प्रयास में लगाकर और आहार दिये व्यक्ति सिद्धि और मुक्ति को प्राप्त करने के लिए ईश्वरीय कृपा की नियति में विधित होने के कारण और

मनुष्य देह, दूसरे अन्य जीवों की देहों की तरह बड़ी आसानी से प्राप्त न होने के कारण से और मनुष्य देह में आत्म विश्लेषण और ईश्वरीय कृपा के स्पष्टीकरण की स्पष्टता अधिक दिखायी देने से और

यह मनुष्य देह निकलने के बाद फिर से ऐसी देह मिलने का निश्चय भी न होने के कारण और

यह मनुष्य देह तो मुक्ति के आनन्द पाने के मात्र ही प्राप्त देह होने के कारण और

यह मनुष्य देह मात्र ही प्रथम सृष्टि के शुरुवात से ही, ईश्वर की स्वीकृति से सृष्टि की गयी उन्नत ज्ञान प्राप्त देह होने के कारण और

मनुष्य मात्र के लिए ही ईश्वर की यह विधि निर्धारित होती है कि भूख मिटाने की जीवकारूण्य विधि को सामान्य रूप से अवश्य दृढ़ पूर्वक पालन करना चाहिए और ईश्वर की विधि होने के कारण भूख को आहार से निवृत्ति की जानेवाली जीवकारुण्य शीलता का, मनुष्यों के बीच अधिकतर पालन करना चाहिए। ऐसे जानना चाहिए।

22. प्रारब्ध के अनुसार पशु, पक्षी आदि जीवों को ईश्वरीय कृपा की नियति के आहार मात्र रहने पर, मनुष्यों को मात्र प्रारब्ध नियति से प्राप्त आहार के साथ आगामी प्रयास के आहार की भी आवश्यकता होती है। यह कैसे? ऐसा कहने पर -

मनुष्य लोग प्रारब्ध के अनुसार नियति के आहार का भोग करके प्रारब्ध के अनुभव की निवृत्ति करके, आगामी से प्रयत्न करके आहार का भोग करके करणेन्द्रिय देह को मजबूत करके सनमार्ग के साधनों का अनुसरण करके सिद्धि मुक्ति का आनन्द प्राप्त करना ही ईश्वर से विधित होने के कारण, मनुष्यों को प्रारब्ध आहार और आगामीय प्रयास का आहार तो अवश्य मिलना चाहिए। इस बात को हमें जानना चाहिए। पशु, पक्षी, रेंगनेवाले प्राणी और वनस्पति आदि जीव देह, दंड के निमित्त विधित देह होने के कारण प्रारब्ध आहार तो ईश्वरीय विधि के अनुसार, ईश्वरीय कृपा शक्ति से बिना रुकावट के दिया जायेगा। इसलिए आगामीय आहार कमाने की आवश्यकता नहीं होती है। इसे जानना चाहिए।

23. लेकिन पहले ऐसा बताया गया था कि जीवकारुण्य सभी जीवों के लिए समान होता है। ऐसे कहने का कारण क्या है? ऐसा कहने पर -

जीवकारुण्य शीलता में मुख्य रूप से सभी मनुष्यों को, आम तौर पर भूख से आनेवाले दुख की निवृत्ति करके आहार से तृप्ति के आनन्द को लाना चाहिए और,

भूख की तरह अन्य किसी-किसी रीति से जीवहत्या घटित होने पर, उस जीव हत्या को किसी भी रीति से रोककर, जीवित कराने के लिए अपने पूरे प्रयत्न लगाकर उसे आनन्द दिलाना चाहिए। और,

रोग, भय आदि अन्य हेतुओं से जीवों को दुख होने पर उन दुखों को अपने प्रयत्नों से दूर कर सकनेवाले होने पर उन्हें दूर करना चाहिए और

पशु, पक्षी, रेंगनेवाले प्राणी, वनस्पति आदि जीवों को भय से आनेवाले दुख और हत्या से आनेवाले दुख को किसी न किसी तरह से निवृत्ति करना चाहिए और

उनमें दुष्ट जीवों से होनेवाले जरा से डर के कारण उन्हें हत्या करना तो, एक छोटे से दुख के लिए हत्या करने का दुख देना उचित नहीं होगा। और

इस प्रकार की सभी बातें जीवकारुण्य ही होती हैं। इसलिए हमें यह जानना चाहिए कि यह तो ईश्वर की आज्ञा होती है कि हमें सभी जीवों के साथ जीवकारुण्य रखना चाहिए।

24. मनुष्य अपने जीवन के सहायक रूप में पानेवाले जीवों में कुछ जीव, तामस आहार कहे जानेवाले मांस आहार खाने के कारण उनकी भूख मिटाते समय उस आहार को देकर क्या मिटा नहीं जा सकता? ऐसा पूछने पर -

एक जीव की हत्या करके दूसरे जीव को मांस से भूख मिटाना जीवकारुण्य शीलता है ही नहीं। और ईश्वर की भी इसकी स्वीकृति नहीं होती है और यह तो प्रकृति का पूर्ण विरोध का कार्य होगा। ऐसे जानना चाहिए।

सभी जीव, प्राकृतिक सच्चाई के सार्वभौमिक रूप के ईश्वरीय

प्राकृतिक स्पष्टीकरण की कृपा के पात्र के होने के कारण और ईश्वरीय प्राकृतिक स्पष्टीकरण का लुप्त हो जाने पर जीव का स्वरूप न रहने के कारण और ईश्वरीय प्राकृतिक स्पष्टीकरण और जीव के प्राकृतिक स्पष्टीकरण दोनों एक दूसरे से न बदलने के कारण और ईश्वरीय प्राकृतिक स्पष्टीकरण और जीव के प्राकृतिक स्पष्टीकरण तो उन उन देहों पर प्रकटित होने के कारण और एक जीव का वध करके उससे दूसरी देह की भूख मिटाना तो जीवकारुण्य शीलता की दृष्टि से पूर्ण विरोध ही तो होगात। इस बात को हमें समझना चाहिए।

25. बाघ, शेर आदि जानवर,, दूसरे जीव की हत्या करके उसे खाकर, तामसीय आहार से अपनी भूख मिटाकर तृप्ति का आनन्द पाकर खुश हो जाते हैं, क्या उस आनन्द को ईश्वरीय प्राकृतिक स्पष्टीकरण की सार्वभौमिकता और जीव का प्राकृतिक स्पष्टीकरण की पूर्ति के रूप में मान सकते हैं? - यों कहने पर -

ऐसा नहीं मान सकते। तामसीय आहार से पूर्ण सत्ववाले ईश्वरीय स्पष्टीकरण के सार्वभौमिक सत्व गुण के आत्म प्राकृतिक स्पष्टीकरण तो, जिस प्रकार अंधेरे के द्वारा प्रकाश प्रकट नहीं होता उसी प्रकार ही प्रकट नहीं हो सकता।

26. इसे तामसीय आहार के रूप में कहने का तात्पर्य क्या है? - यों कहें तो -

ईश्वरीय स्पष्टीकरण प्रकट न होने के रूप में, आत्म स्पष्टीकरण को लुप्त करानेवाली हिंसा का आहार होने के कारण वह तामसीय हो गया।

27. इस आहार से आये हुए तृप्ति के आनन्द के खुश का स्पष्टीकरण किसका स्पष्टीकरण होता है? ऐसा पूछने पर -

अनादि पशुकरण की माया का स्पष्टीकरण ही मानना चाहिए।

28. पशु के नाम से किसे कहा जाता है? ऐसा पूछने पर-

अहंकार, माया, कन्म (अनैतिक आचरण) आदि त्रिमलों के बन्धन से एकत्रित होकर बुद्धिविहीन आत्मा ही पशु कहा जाता है।

29. उस पशु का स्पष्टीकरण कैसे होगा? - ऐसा पूछने पर -

सूर्य को छिपाये मेघ के रूप में रहनेवाले अंधकार में भी सूर्य का प्रकाश विशेष रूप से प्रकट होने के कारण वह अंधकार भी स्पष्ट रूप से प्रकटित होता है। उसी तरह अशुद्ध मायाकरण और तामस गुण आदि अंधकार के रूप में होने पर भी अपने द्वारा छिपाये गये परजीव के स्पष्टीकरण की विशेषता से अशुद्ध मायाकरण और तामस गुण स्पष्ट रूप से प्रकटित होते हैं। इसलिए मांस-आहार से आनेवाला स्पष्टीकरण अशुद्ध मायाकरण का ही स्पष्टीकरण होता है। ऐसा ही समझना चाहिए।

वनस्पतियाँ भी तो जीव होती हैं

30. लेकिन वृक्ष, घास, धान आदि वनस्पतियाँ भी जीव ही तो कही जाती हैं। उनकी हिंसा करके आहार लेना तो क्या वह भी तामस आहार ही तो नहीं होगा? क्या उससे आये हुए आनन्द तो अशुद्ध मनोकरण आनन्द ही तो नहीं होगा? यों प्रश्न करें तो -

वृक्ष, घास, धान आदि वनस्पतियाँ भी जीव ही होती हैं। उनकी हिंसा करके आहार लेना तो वह सार्वभौमिक रूप का तामसीय आहार ही तो होता है। उस आहार से आया हुआ आनन्द तो अशुद्ध करण का आनन्द ही है। ऐसा होने पर भी वैसा नहीं होगा।

वृक्ष, घास, धान आदि जीव स्पर्श नाम के एकचेतनावाले जीव होने के कारण और उन शरीरों में जीव का स्पष्टीकरण एक पक्ष के रूप में ही प्रकट होने के कारण और उन जीवों को उत्पन्न करनेवाले बीज

भी अन्य बीजों की तरह जड़ वस्तु होने के कारण और उन बीजों को हम खुद ही बोकर जीव उत्पन्न कर सकने के कारण और उन जीवों की बरबादी न करके उन जीवों में प्राण रहित, जीव का उत्पन्न करनेवाले जड़ों के रूप में उत्पन्न होनेवाले बीजों को और तरकारियों को और फलों को और फूलों को और मूलों को और पत्तों को आहार के रूप में लेने के सिवा उन जीवित असलीय मूल बीजों को आहार के रूप में न लेने के कारण और उनमें दाना, तरकारी, फल आदि लेते समय, शुक्ल, नख, रोम आदि निकलने पर जैसे हिंसा नहीं होती है, वैसा ही इसमें भी हिंसा न होने के कारण और वनस्पति वर्गों के जीवों को मन आदि अंतःकरणों की वृत्ति न होने के कारण, वह तो जीवहत्या नहीं होती है और उनको दुख भी नहीं पहुँचा जाता है। इसलिए वह तो जीवकारुण्य का विरोध नहीं होता। उस आहार से आनेवाला आनन्द भी जीव स्पष्टता सहित ईश्वरीय स्पष्टीकरण ही होगा -ऐसे समझना चाहिए।

31. वृक्ष आदि वनस्पतियों में पैदा होनेवाले बीजों को, आगे जीव के रूप में पैदा करनेवाला जड़ ही कहते हैं - यह कैसे? यों पूछने पर।

यदि बीजों में जीव होता तो, जमीन पर बोने के पहले ही उगता होगा। जमीन पर बोये गये समय पर भी कुछ बीज बिना उगते ही रहते हैं; इसके अलावा बीज तो कारण ही होता है। और यह कारण तो एक शरीर तो उत्पन्न करने के लिए होता है। इस बात को छोटे बच्चे भी जान सकेंगे। इसके अलावा, प्राण तो नित्य वस्तु होती है, पर शरीर तो अनित्य वस्तु होती है। नित्य कहे जानेवाले प्राण को कारण की आवश्यकता नहीं पड़ती है; अनित्य होनेवाले शरीर को एक कारण की आवश्यकता पड़ती हैं। इसलिए बीजों को जड़ वस्तुओं के रूप में ही जानना चाहिए।

32. लेकिन बीजों के अन्दर आत्माएँ कैसे सम्मिलित होती हैं? ऐसा पूछें तो -

जमीन पर मिश्रित बीज को पानी देने पर, उस पानी के माध्यम से ईश्वरीय कृपा की नियति के अनुसार आत्माएँ अणु देहों के साथ मिलकर जमीन के अन्दर जाकर, उस जमीन के पक्व शक्ति के साथ मिश्रित होकर बीजों के स्थानों के रूप में जाते हैं ऐसा समझना चाहिए।

33. कुछ लोग कहते हैं कि अंकुरों को उखाड़ना नहीं चाहिए। बीज, तरकारी, पत्ता आदियों को खा सकते हैं - ऐसा कहना कैसे उचित होगा? यों कहें तो -

बीज जमीन पर पड़ने के बाद पानी के द्वारा आत्मा जाकर, पक्व शक्ति से मिलकर बीज में सम्मिलित होकर उगने के कारण अंकुर तो बीज, तरकारी आदियों के समान जड़ नहीं होता। इसलिए, अंकुरों को नहीं उखाड़ना चाहिए। यह बात तो सच ही होगा ऐसे जानना चाहिए।

वनस्पति आहार

34. बीज, तरकारी, फल आदि में जीवहत्या न होने पर भी नख, रोम, शुक्ल आदि में होनेवाली अशुद्धि क्या इनमें नहीं होती? ऐसा पूछने पर -

तत्त्व वृत्ति और धातु वृत्ति न रहने के कारण अशुद्ध नहीं होते। इसलिए वृक्ष, घास, धाना आदि के बीज, तरकारी, फल, पत्ता आदि को खाना जीवकारुण्य का विरोध नहीं होगा। ऐसे जानना चाहिए।

आमिष (मांस) आहार भी नियति नहीं होती।

आमिष आहार, बाघ आदि दुष्ट जानवरों की नियति का आहार ही तो होता है? - इसे जानने के लिए -

वह तो उन जीवों को सृष्टि की नियति का आहार तो है नहीं; परम्परा की रीति से प्राप्त आहार के रूप में इसे मानना चाहिए। इसलिए उसकी निवृत्ति करके सात्विक आहारों को खिला भी सकते हैं। एक शीलवान के गृह में पाले जानेवाली बिल्ली और कुत्ते को अन्य जगहों पर जाकर, अशुद्ध आहार न खाने की रखवाली करके, आरम्भ से लेकर, शुद्ध आहार लेने की ही आदत बना देता है। वे उनको खाकर जीवित रहने लगते हैं। ठीक इसी तरह बाघ, शेर आदि दुष्ट वर्गों को भी निकट रहकर, शुद्ध आहार की आदत को पड़ानेवाला कोई न होने के कारण, वे अशुद्ध आहारों को अपनी आदत के अनुसार खाते हैं। इस प्रकार हम इसे जान सकते हैं।

इसलिए एक जीव की हत्या करके दूसरे जीव की भूख मिटाना तो ईश्वर की स्वीकृति भी नहीं होती और वह जीवकारुण्य शीलता भी नहीं होती। इस सत्य को जानना चाहिए।

इस जीवकारुण्य के नाम के साधन पर साध्य होनेवाला सुख तो 'अपर सुख' और 'पर सुख' के नाम से दो प्रकार का होता है।

अपर सुख

इच्छा आदियों से संबंधित होनेवाले दुख की निवृत्ति कराने से जो सुख मिलता है वह अपर सुख होता है। वे इहलोक में अनुभव करनेवाले सुखों में से कुछ होते हैं। ऐसा जानना चाहिए।

36. वे क्या होते हैं? - ऐसा कहें तो -

पहनने का वस्त्र न होते और रहने के लिए कोई स्थान न होकर, जोतने के लिए खेत न रहते हुए और बसने के लिए पत्नी न होते हुए और इच्छानुसार करने के लिए धन आदि भिन्न साधन न होकर दुखी जीवों के विषयों में, जीवकारुण्य का उद्भव होकर पहनने का वस्त्र, रहने के लिए स्थान, जोतने का खेत बसने के लिए स्त्री, इच्छानुसार करने के लिए धन आदि देने पर, इनको प्राप्त किये जानेवाले लोगो के मन के अंदर से मुख में दीखनेवाले सुख का स्पष्टीकरण और उस सुख को देखकर, देनेवालों को होनेवाले सुख का स्पष्टीकरण और ईश्वरीय करण में सार्वभौमिक और जीवकरण में पूर्णता के रूप में उद्भव होनेवाले के कारण वह अपर सुख होता है। ऐसा जाना चाहिए।

पर सुख

भूख से आनेवाले दुख की निवृत्ति कराने से जो सुख आता है वह 'पर सुख' होता है। वे इह लोक में भोग सिद्धि से और योग सिद्धि से और ज्ञान सिद्धि से आनेवाले सुख और अंत में अनुभव किए जानेवाले मोक्ष का सुख भी होगा- ऐसे जानना चाहिए। भोजन करने के लिए आहार के न मिलते, थके हुए जीवों को जीवकारुण्य से आहार देने से, भोजन करके भूख मिट जाते समय, उन जीवों को मन और मुख पर प्रफुल्लित होकर प्रवाहित होनेवाला सुख और उसे देखने पर देनेवालों के मन और मुख पर भी उसी तरह होनेवाला सुख और आत्मा सहित ईश्वहीय करण में पूर्ण रूप से उत्पन्न होनेवाले होने के कारण यह 'पर सुख' होता है। ऐसा जाना होगा।

वस्त्र, स्थान, जमीन, स्त्री, धन आदि न होकर दुखी होनेवाले उन दुखों को मन के उद्वेग से सहन करके जीवन बिताकर अपने आप से किये जानेवाला प्रयत्न तो कर सकेंगे। भूख से दुखी होने पर मन के

उद्वेग से उस दुख को सहन करना नहीं चाहिए। उसे सहन करने की शुरुवात् में ही देहांत हो जायेगा।

भूख की असहिष्णुता

भूख लगने पर

माँ-बाप अपने पुत्रों को बेचकर और पुत्र अपने माँ-बाप को बेचकर और अपनी पत्नी को पति बेचकर और पति को पत्नी बेचकर उस भूख से आनेवाले दुख को बदलने का साहस ही उठा सकेंगे तो यह कहने की आवश्यकता नहीं पड़ती हैं कि अन्य चीजें जैसे घर, गाय, जमीन आदि को बेचकर भूख को मिटा लेंगे।

पूरे संसार-भर का शासन करनेवाले सम्राट होनेवाले राजा भी तो भूख लगने पर अपने सारे ऊँचे अधिकार छोड़कर धीमे शब्दों में, अपने निकट के मंत्रियों से अपनी कमी को इस प्रकार बताता है कि मुझे भूख लगी है; अब मैं क्या करूँ?

शत्रु से चलाये गये बाण को अपनी छाती से निकालकर, हाथ में पकड़ते हुए, सामना करनेवाले सभी शत्रुओं को, निडर होकर एक मिनट पर जीतनेवाला शुद्ध वीर भी, भूख लगने पर अपनी सुविधाओं को खोकर भूख के डर से, निकट पर रहनेवालों को देखकर, यह शिकायत करते हैं कि थकावट तो ही आयेगी। कैसे लडाई करें?

इस संसार के भोगों के साथ, इन्द्र लोक आदि के भोगों को भी तुच्छ मानकर घृणा करके, उन्हें परित्याग करके, ज्ञानवान और अनुभवशाली ज्ञानियाँ भी और इन्द्रियों का वश करके मनोलय होकर, सच्ची निष्ठा में रहनेवाले योगी लोग और मरे हुए लोगों को भी उठा सकने के असीमित महत्व रखनेवाले सिद्ध लोग और मुनियाँ और तपस्वियाँ आदि भी भूख लगने पर, अपने अपने अनुभव के लक्ष्यों को

छोड़कर, दूसरे गाँव की ओर भिक्षा लेने आते हैं; भिक्षा न मिलने पर व्याकुल हो जाते हैं।

स्वप्न में ही एक अपमान होने पर, उसके लिए अपने प्राण छोड़नेवाले मानी लोग भी भूख लगने पर, जिससे कहना नहीं चाहिए ऐसे व्यक्ति से भी कहकर मानभ्रष्ट हो जाते हैं।

जाति, धर्म के आचारों में व्यस्त आचार्य लोग भी भूख लगने पर, आचार को भूलकर आहार की प्रतीक्षा करते हैं।

शिक्षा के शास्त्रों में निपुण होकर, उनसे सम्बन्धित सूक्ष्म ज्ञान पाकर, कई महान को भी कर सकने में शक्तिशाली होनेवाले भी भूख लगने पर अपने ज्ञान और विचार नष्ट होकर तडपते हैं।

दिन-रात का भेद न सूझकर, संभोग के आनन्द में प्रवाहित होकर रहनेवाले कामी लोग भी भूख लगने पर संभोग के सुख को भूलकर काम इच्छा से विरक्त होकर व्याकुल होते हैं।

हम ही बड़े हैं, और हम से बढ़कर और कोई बड़ा है ही नहीं ऐसा घमंड रखनेवाले अहंकारी लोग भी, भूख लगने पर, अपने अहंकार नष्ट होकर आहार देनेवाले को ही बड़ा मानकर उसकी प्रशंसा करते हैं।

एक प्रकार के कार्यों में, अनेक प्रकार से उपचार करनेवाले भड़कीले लोग भी भूख लगने पर अपने भडकीला छोड़कर मोहित हो जाते हैं।

इन इन लोग इस इस प्रकार के होने पर, एक प्रकार के आधार भी न होनेवाले गरीब लोग, भूख लगने पर कैसे तड़पते होंगे। उस समय उन गरीबों को आहार मिलने पर किस प्रकार की प्रसन्नता होगी! उस खुशी को दिलानेवालों को किस प्रकार का लाभ प्राप्त होगा। इस प्रकार की बातों को कहने में ही खूबी होगी! ऐसे जानना होगा।

भूख की वेदना
जीवों को अधिक भूख लगते समय

जीव बुद्धि के स्पष्टीकरण के बिना बेहोश होता है।

उसका बेहोश होने के कारण, ज्ञान के भी ज्ञान होनेवाले ईशवर का स्पष्टीकरण गायब हो जाता है।

वह गायब होने से पुरुष तत्त्व थक जाता है।

वह थक जाने से प्रकृति का तत्त्व शिथिल होता है।

वह शिथिल होने पर सारे गुणों का भेद हो जाता है।

मन विचलित होकर बिखर जाता है।

बुद्धि हीन हो जाती है।

चित्त व्याकुल हो जाता है।

अभिमान का नष्ट होता है।

प्राण चक्कर खाता है।

सभी भूत (पंचभूत का शरीर) बिखर जाते हैं।

वात-पित्त श्लेष्म आदि अपनी स्थिति से बदल जाते हैं।

आँख की रोशनी ओझल होकर आँख फूट जाती है।

कान घुमराकर बहरा हो जाता है।

जीभ सूख जाती है।

नाक में जलन होता है।

त्वचा सिकुडकर स्पर्श की शक्ति चली जाती है।

हाथ पैर थककर शिथिल हो जाते हैं।

वाक् की ध्वनि बदलकर प्रलाप करती है।

दाँते ढीले पड़ जाते हैं।

मल-विसर्जन का मार्ग कुम्हला जाता है।

शरीर जल जाता है।

रोमादि उभर जाते हैं।

नस शिथिल होकर आघात होता है।

नाडियाँ शिथिल होकर मुरझा जाती हैं।

हड्डियाँ जलकर उनका जोड़ कडा हो जाता है।

हृदय खौलने लगता है।

दिमाग सिकुड जाता है।

शुक्ल सूख जाता है।

कलेजा पिघल जाता है।

रक्त और जल झुलस जाते हैं।

मांसपेशी ढीला होकर अपना स्वभाव बिगड जाता है।

पेट एकाएक जलता है।

ताप की तीव्रता अधिक होती है।

जान निकल जाने की बात की अधिक निकटता होने के निशान और अनुभव अत्यधिक रूप में उदय होते हैं।

भूख से इतनी वेदनाओं का उदय होना तो सभी जीवों के लिए समान रूप से ही होता है।

इतनी वेदनायें आहार प्राप्त होने पर, खाने से, भूख मिट जाने से दूर हो जाती हैं।

उस समय शरीर के सभी तत्त्व संपन्न होकर, दिल बहलाकर, ज्ञान विकसित होकर मन के अंदर और मुख पर भी जीव की स्फूर्ति

आकर, ईश्वरीय आभा प्रवाहित होकर, अनुपम तृप्ति का आनंद पैदा होता है।

इस प्रकार के आनंद को उत्पन्न करनेवाले पुण्य के समान और किस पुण्य को कह सकते हैं?

इस पुण्य को करनेवाले पुण्यशालियों को किस देवता के तुल्य में कहा जा सकता है?

सभी देवताओं में से श्रेष्ठ देवता के अंश के ही होंगे- ऐसे ही वास्तव मे समझना चाहिए।

इसलिए नरक-लोक की वेदना, जनन की वेदना, मरण की वेदना आदि तीन वेदनायें मिलकर, अंत में होनेवाली वेदना ही भूख की वेदना होती है और अंदर, बाहर, बीच में, नीचे, ऊपर, निकट आदि सभी स्थानों पर व्याप्त होकर, न बदलनेवाले मोक्ष के आनंद ही, आहार से होनेवाली तृप्ति का आनंद होता है - ऐसे जाना जाता है।

भूख तो एक उपकार का ही साधन होता है।

भूख न होने पर

जीव आहार के सम्बन्ध में, एक दूसरे की प्रतीक्षा नहीं करेंगे, प्रतीक्षा न करने से, उपकार की क्रिया का उदय न होने के कारण, वहाँ जीवकारुण्य प्रकट नहीं होगा। वह प्रकट न होने से, ईश्वरीय कृपा भी प्राप्त नहीं होगी। इसलिए भूख भी ईश्वर से दिया गया एक उपकार का साधन होगा - ऐसे समझना चाहिए।

भूख से तड़पनेवाले लोग, आहार को देखते समय, जो सुख प्राप्त करते हैं वह सुख तो अपने माता, पिता, पुत्री, पुत्र, धरती, भूमि, सोना, रत्न आदि को देखने पर भी प्राप्त नहीं करेंगे। इसलिए आहार को देखते समय प्राप्त होनेवाला आनंद किस प्रकार का आनन्द होगा!

इसलिए इस आहार के स्वरूप, रूप, स्वभाव को भी ईश्वर के ही सार्वभौमिक स्वरूप, रूप, स्वभाव ही समझना चाहिए।

जीवकारुण्य

1. भूख नामक अग्नि, गरीबों के शरीरों में उज्वलित होकर जलते समय, आहार से उसे बुझाना ही जीवकारुण्य होता है।

2. भूख नामक विषवायु गरीबों की बुद्धि के रूप के दीपक को बुझाते समय, आहार देकर, बुझाये बिना उस दीपक को जलाना ही जीवकारुण्य होता है।

3. ईश्वर की प्रकृति के स्पष्टीकरण होनेवाले जीव-देह रूपी मंदिर, भूख के कारण बरबाद होते समय, आहार देकर उनकी रक्षा करना ही जीवकारुण्य होता है।

4. ईश्वरीय आनंद की प्राप्ति के निमित्त, शरीरों पर निवास करनेवाले जीवों के तत्त्वों के सारे परिवार, भूख से तड़पकर विनाश होते समय, आहार देकर उन सारे परिवार को स्थिर रखने का कार्य करना ही जीवकारुण्य होता है।

5. भूख रूपी बाघ, गरीब जीवों के जान को, झपटकर मारने की शुरुआत में ही उस बाघ को मारकर उस जीव की रक्षा करना ही जीवकारुण्य होता है।

6. भूख रूपी विष सिर तक चढ़कर, जीव बेहोश होते समय, आहार देकर उस विष को उतारकर, बेहोशी को दूर करना ही जीवकारुण्य होता है।

7. भूख रूपी निष्ठुर बिच्छू पेट पर जाकर, डंक मारते समय, कठोर दर्द से व्याकुल होनेवाले गरीबों को आहार से, उस दर्द को बदलाकर व्याकुलता को दूर करना ही जीवकारुण्य होता है।

8. कल सारे दिन-रात हमारे शरीर के आधे भाग को मारकर खायी भूख रूपी पापी आज भी तो आयेगा - इसके लिए क्या करें? ऐसी चिंता में पड़नेवाले गरीब जीवों की चिंता को दूर भगाना ही जीवकारुण्य होता है।

9. धूप तो चढ़ती जा रही है! अब भूख नाम की वेदना निकट आयेगी। इस विधिवश के लिए हम क्या करें? ऐसा सोचकर शहद में पड़ी मक्खी की तरह तड़पनेवाले गरीब जीवों की व्याकुलता को दूर करना ही जीवकारुण्य होता है।

10. अंधेरा छा रहा है -अभी आहार के लिए कहाँ जायेंगे? किससे माँगे? क्या करें - इन विचारों के दबाव में पड़े हुए गरीब जीवों के विचार को बदलना ही जीवकारुण्य होता है।

11. चलते-चलते पाँव भी थक गये- माँगते-माँगते मुँह भी थक गया; सोच-सोचकर मन भी थक गया; अभी से इस पापी-पेट के लिए क्या करें? ऐसा सोचकर आँसू बहानेवाले गरीबों को आहार देकर उनकी आँसु को बदलना ही जीवकारुण्य होता है।

12. दिन का समय बीत गया। भूख भी परेशान करती है; दूसरी जगहों पर जाने के लिए लज्जा रोकती है - मुँह खोलकर माँगने में सम्मान का दर्दनाक होता है - पेट तो जलता है - प्राण त्याग करने का उपाय भी नहीं सूझता-इस शरीर को क्यों प्राप्त किया -यह सोचकर मन और मुख थककर, बोलने को भी जीभ न उठते हुए, बुरे स्वप्न को देखे गूँगे की तरह मन विचलित होकर, मानी होनेवाले जीवों को आहार देकर उनकी मान की रक्षा करना ही जीवकारुण्य होता है।

13. ''यदि हम पिछले जन्म पर भूखी लोगों की भूख की जानकारी करके, उनकी भूख दूर किये होते तो इस जन्म पर अपनी भूख

की जानकारी करके, भूख की निवृत्ति करने के लिए कोई हमारे सामने आयेंगे; मगर उस समय हमने ऐसा नहीं किया; अब हमारे लिए इस प्रकार करनेवाले भी कोई नहीं है।" ऐसे प्रलाप करते हुए, निद्रा भी छोड़कर दुखी होनेवाले गरीब जीवों को आहार देकर उनका दुख दूर करके उन्हें सुखी नींद कराना ही जीवकारुण्य होता है।

14. सारे शरीर के नस बाहर दीखने की स्थिति में भूख से शरीर दुबला होकर, जान सिकुड़कर मूर्छा होने के समय पर भी, अन्य लोगों से माँगने का साहस न करके, ईश्वर की चिंता में ही आग पर लेटकर निद्रा करने का प्रारम्भ करनेवाले के समान पेट पर क्रूर भूख की अग्नि को रखकर लेटने का प्रारंभ करनेवाले विवेकियों को आहार देकर उनकी भूख-अग्नि को शांत करना ही जीवकारुण्य होता है।

15. कल हम भूखे पड़े थे; उसी तरह आज भी हम कैसे भूखे रहें? हम तो बाल्यवश के कारण आज भी भूखे रहने का साहस कर भी लें तो भी, भूख का सहन न करनेवाली हमारी गरीबी पत्नी के पेट के लिए क्या करें? इसकी भूख की चिंता करना तो बड़ी बात नहीं है। पर वार्तिप दिशा से (बुढ़ापे के कारण) बहुत ही कमजोर होनेवाले हमारे माँ-बाप लोग आज भी भूखे रहें तो वे लोग मर ही जायेंगे। इसके लिए हम क्या करें? भूख के कारण रो-रोकर थके हुए हमारे पुत्रों के उदास मुख को कैसे देखें? इस प्रकार सोच-सोचकर लोहार की भट्टी की अग्नि की तरह भूख की अग्नी और भय की अग्नी और विचार की अग्नि अन्दर जलते समय, गाल फुलाकर, आँखों में आँसू भरे चिंतित दुखी गरीबों को आहार देकर उनकी वेदना को बदलना ही जीवकारुण्य होता है।

16. आँख, हाथ, पैर आदि अंगों में कोई कमी न होकर, अपने आहार कमाने के लायक शक्ति होनेवाले भी भूख से दुखी होकर यहाँ लेटे हुए हैं - इस स्थिति में - ''अंधे, बहरे, गूँगे और लंगडे होनेवाले हमें आहार किस मार्ग से प्राप्त होगा? भूख कैसे मिटेगी?" इस प्रकार एक-एक करके सोच-सोचकर दुखी होनेवाले गरीबों को आहार देना ही जीवकारुण्य होता है।

17. भूख से दुखी लोग किसी भी देश के रहनेवाले क्यों न हों और किसी भी धर्म का पालन करनेवाले ही क्यों न हों और किसी भी जातिवाले ही क्यों न हो और किसी भी पेशा करनेवाले ही क्यों न हों, तो भी उनके देश की शीलता, धर्म की शीलता, जाति की शीलता, पेशे की शीलता आदि बातों पर भेद-भावों का विचार न करके, सभी जीवों पर ईश्वरीय स्पष्टीकरण सामान्य रूप से जो प्रकटित होता है उसे जानकर, सामान्य रूप से देखकर हरेक की शीलता के अनुसार उनकी भूख की निवृत्ति करना ही जीवकारुण्य होता है।

18. सन्मार्ग शीलता के योग्य सात्विक आहार से भूख की निवृत्ति कर लेनेवाले पशु, पक्षी, रेंगनेवाले, वनस्पति आदि जीवों को भूख लगने पर, भूख की निवृत्ति करना ही जीवकारुण्य होता है।

भूख की निवृत्ति कर लेने के योग्य, भुवन-भोग की स्वतंत्रता पाने का ज्ञान होने पर भी, पूर्व के और असावधानी के कारण, उस स्वतंत्रता को न पाकर भूख से तड़पनेवाले जीवों को आहार देकर, उनकी भूख की पीड़ा को दूर करके, तृप्ति का आनंद दिलाने के कारण होनेवाले जीवकारुण्य नामक चाबी के द्वारा ही मोक्ष के नाम के परलोक के किवाड़ को खोलकर अंदर जाकर, किसी भी काल में नष्ट न होनेवाले सुख का अनुभव करके जीना चाहिए।

इसलिए जीवकारुण्य नामक, मोक्ष गृह की चाबी को, अपने जीवनकाल में ही कमाये हुए गृहस्थ लोग-चर्या, क्रिया, यग, ज्ञान आदि साधनों की सहायताओं के बिना ही, किसी भी काल में न प्राप्त किये हुए सुख के गृह पहुँचकर, उस गृह के किवाड को खोलकर अंदर जाकर, नित्य मुक्त होकर जीयेंगे।

पुण्य भूमियों की परिक्रमा करना, पुण्य तीर्थों पर स्नान करना, पुण्य स्थलों पर निवास करना, पुण्य मूर्तियों का दर्शन करना, स्तोत्र करना, जपना, व्रतों का पालन करना, याग का अनुष्ठान करना, पूजा करना आदि चर्या - क्रियादियों को करनेवाले व्रति लोग और भक्तों और ऋषियों और आहार का त्याग करके, निद्रा को छोड़कर, विषय-सुरवादि (त्रिविध इच्छाओं) का त्याग करके, इन्द्रियों को अपने वश में लाकर, ध्यानमग्न होकर योग में रहनेवाले योगियों और असीमित सिद्धि का आनन्द प्राप्त सिद्ध लोग और नित्य-अनित्यों को जानकर सभी बन्धनों से मुक्त होकर ब्रह्मानुभव को प्राप्त ज्ञानी लोग भी यदि जीवकारुण्य नाम की चाबी को प्राप्त नहीं करते तो मोक्ष के 'पर-लोक' के गृह के आगे और पीछे चढ़कर उसके निकट जाकर प्रतीक्षा करके, फिर वापस लौटकर उस चाबी को कमाने के लिए आयेंगे न कि दरवाजे खोलकर अंदर प्रवेश करके सुख पूर्वक जीयेंगे- इस बात को जानना चाहिए।

इसलिए बुद्धिशाली जीवों को जीवकारुण्य ही ईश्वर की आराधना होती है- इस बात को जानना होगा। इसके अलावा जीवकारुण्य की शीलता का पालन करनेवाले होकर, पीना, खाना आदि प्रपंच के भोगों का अनुभव करनेवाले सभी संसारी लोग सर्वशक्तिशाली होनेवाले ईश्वर के पूर्ण कृपा के पात्र हो जायेंगे।

जीवकारुण्य शीलता के बिना ज्ञान, योग, तप, व्रत, जप, ध्यान आदि करनेवाले, जरा भी ईश्वर की कृपा के पात्र नहीं होंगे। उन्हें तो

आत्म-विचार वाले के रूप में भी मानना नहीं चाहिए। जीवकारुण्य के बिना किये जानेवाले सभी कार्य तो कोई प्रयोजन के बिना करनेवाले माया-जाल के कार्य ही होंगे-इसे जानना चाहिए।

सभी जीव ईश्वरीय प्राकृतिक सच्चाई के सार्वभौमिक रूप होने के कारण और उनके अंदर ईश्वर की कृपा का स्पष्टीकरण प्रकट होने के कारण और गृहस्थ लोगों में अपने माँ-बाप, जीवन साथी, बच्चे, बन्धुओं आदि अपने परिवार तक ही, भूख मिटाने के योग्य अल्प शक्तिवाले गृहस्थ लोग अपने माँ-बाप, बच्चे, जीवन-साथी आदि अपने परिवार के लोगों को भूख से तड़पते हुए छोड़कर, अन्य लोगों की भूख मिटाने का प्रयास करना और अपने निकट भूख से तड़पते हुए आनेवाले अन्य लोगों को तड़पते ही छोड़कर, अपने परिवार के लोगों की भूख को मिटाने का प्रयास करना तो ईश्वर का सहमत नहीं होता।

इसलिए अपने परिवार के खर्चों को कुछ हद तक किफायत करके, दोनों तरफ के लोगों की भूख को मिटाना चाहिए और अल्प शक्ति की कमी के कारण अपने परिवार तक के लोगों की ही भूख मिटाने के प्रयास में थोडा सा प्रयत्न करनेवाले गृहस्थी लोग अपने परिवार के लोगों की भूख तक ही मिटाकर अपने निकट भूखा आनेवाले अन्य लोगों के विषय में अधिक दयवान होकर उनकी भूख को अन्य किसी व्यक्ति के द्वारा मिटाने के योग्य प्रयत्न करना चाहिए और स्वाभाविक रूप से प्रबल गृहस्थ लोग अपनी-अपनी आमदनी के अनुसार माता-पिता, जीवन-साथी, बच्चे, साथी, बन्धु, मित्र, अतिथि लोग, महान लोग गुलाम लोग, पड़ोसी शत्रु आदि लोगों की भी और अपने कुटुंब के सहायक रहनेवाले गाय, बैल, भैंस, बकरी, घोड़ा, वनस्पति आदि प्राणियों की भी भूख मिटाकर तृप्ति का आनन्द दिलाना चाहिए और विवाह, पुत्र का जन्म, दैविक आराधना आदि कई तरह की क्रियाओं में, विभिन्न प्रकार के संस्कार और विविध विनोद के कलाप और कई

तरह के सम्मान के वैभव आदि बातों में जैसे धन खर्च किये जाते हैं वैसे ही विवाह आदि शुभ कार्यों में भूखे जीवों की भूख मिटकर आनन्द दिलाने के कार्य को विशेष रूप से करना चाहिए और ऐसा करने पर भूखे लोग अपनी भूख मिटकर जिस आनंद का अनुभव करेंगे उससे कई गुना अधिक आनंद का अनुभव स्वयं करेंगे आदि बातें तो सत्य होती हैं - ऐसे जानना चाहिए।

गृहस्थ लोग विवाहादि विशेष कार्यों में शामियाना को सजाकर, वहाँ विभिन्न क्रिया-कलाप करके- नृत्य, गीत, पंक्तियाँ, बरात आदि विनोदों को स्वादिष्ट भक्षणादि और चित्रान्न (विभिन्न प्रकार के भात) आदि आडंबर के कार्य करके खुशी में डूबते समय भूखे गरीबों के मुँह तक को देखने के लिए भी सहमत नहीं होते। इस प्रकार की खुशी के समय अपने को या अपने बच्चों को या अपने साथी लोगों को एक न एक प्रकार की कोई विपत्ति आती है तो, अपनी सारी खुशी को छोड़कर, दुखी होते हैं। इस प्रकार दुखी होते समय अलंकृत शामियाना और संकल्प किये गये संस्कार, नृत्य, गीत, वाद्य पंक्तियाँ, बरात आदि विनोद और स्वादिष्ट भक्षणादि, चित्रान्न आदि आडंबर तो उस आफत को रोकते हुए नहीं देखा गया। उन शुभ कार्यों में रहते हुए भूखे जीवों को आहार देकर भूख मिटाकर उनके मन और मुख पर ईश्वर का स्पष्टीकरण और ईश्वरीय प्रसन्नता को प्रकट होने दें तो वह स्पष्टीकरण और प्रसन्नता, उस क्षण पर घटित हुई आफत को दूर करके स्पष्टीकरण और प्रसन्नता को क्या सचमुच ही तो उत्पन्न नहीं करेगा? इसलिए विवाह आदि विशेष वैभवों पर अपने-अपने स्तर के अनुसार भूखे लोगों की भूख को दूर करके तृप्ति आनंद को दिलाना तो अनिवार्य होता है ऐसे समझना चाहिए।

1. सूल रोग, मरोड़ा, (पेट की पीड़ा) कुष्ट रोग आदि न सुधरनेवाले रोगों से पीडित गृहस्थ लोग, अपने स्तर के अनुसार भूखे लोगों

की भूख मिटाने के व्रत का अनुसरण करेंगे तो वह जीवकारुण्य-अनुसरण ही एक अच्छी दवा के रूप में, उन रोगों की निवृत्ति करके, विशेष आरोग्य को उत्पन्न करेगा-यह तो सत्य है।

2. कई दिनों से सन्तान का भाग्य न होकर, विभिन्न व्रतों का पालन करके चिंतित गृहस्थ लोग अपने स्तर के अनुसार भूखे गरीबों की भूख मिटाने को, एक व्रत के रूप में यदि पालन करेंगे तो वह जीवकारुण्य का अनुसरण ही अच्छे बुद्धिशाली संतान का उत्पन्न करेगा- यह तो सत्य है।

3. कोई गृहस्थ लोग जिनको यह सूचना मिलती है कि वे अल्प आयु के होनेवाले हैं तो, मरने के डर से चिंतित ये गृहस्थ लोग यदि अपने स्तर के अनुसार भूखे गरीबों की भूख मिटाने का अनुसरण करेंगे तो वह जीवकारुण्य अनुसरण ही दीर्घ आयु का उत्पन्न करेगा। यह तो सत्य है।

4. शिक्षा, ज्ञान, ऐश्वर्य भोग आदि बातों से चिंतित गृहस्थ लोग अपने स्तर के अनुसार, यदि भूखे गरीबों की भूख मिटाने के व्रत का अनुसरण करें तो वह जीवकारुण्य का अनुसरण ही शिक्षा, ज्ञान, ऐश्वर्य, भोग आदि बातों का उत्पन्न करेगा। यह तो सत्य है।

5. भूखे लोगों की भूख मिटाने को ही अपने व्रत के रूप में माननेवाले, जीवकारुण्य का भाव रखनेवाले गृहस्थी लोगों को गरमी के दिनों में गरमी नहीं तपाती है; मिट्टी भी गरम नहीं रहेगी; तेज की वर्षा, तेज हवा, तीव्र ओस, तेज पवि, तेज आग आदि उत्पातों के दुख आदि नहीं संभव होंगे। महामारी, विषवायु, विष ज्वर आदि असाध्य रोग भी नहीं होंगे। उन जीवकारुण्यवाले गृहस्थी लोग नदी के बाढ और डाकुओं और

विरोधियों से व्याकुल नहीं होंगे। राजाओं और देवताओं से भी अनादर नहीं किये जायेंगे।

जीवकारुण्य का पालन करनेवाले गृहस्थ लोगों के उपजाऊ खेत में बिना प्रयास के ही पैदावर अत्यधिक हो सकता है। व्यापार में किसी रुकावट के बिना लाभ की प्राप्ति और उद्योग में कोई आपत्ती के बिना उन्नती होगी। वे लोग बंधुओं गुलामों से घेरे रहेंगे। दुष्ट जानवर और दुष्ट जीवों और दुष्ट पिशाच और दुर्देवता आदि से भय नहीं होगा।

जीवकारुण्य रहनेवाले गृहस्थी लोगों को असावधानी से और प्रारब्ध से भी किसी प्रकार की भी आफत वास्तव में नहीं आयेगी।

यह तो ईश्वर की आज्ञा होती है कि भूखे लोगों की भूख दूर करके, आनंद दिलानेवाली जीवकारुण्य शीलता नामक उन्नत व्रत तो देवताओं, मनुष्यों, ब्रह्मचारियों, गृहस्थों, तपस्वियों, सन्यासियों, पुरुष जाति के लोग, स्त्री जाति के लोग, बूढ़े, जवान, ऊँचे लोग, नीचे लोग आदि सभी लोगों से अवश्य करने योग्य होता है- इसे जानना चाहिए।

भूखे लोगों की भूख को मिटाने के विषय में यदि पति को पत्नी रोके और पत्नी को पति रोके और पुत्रों को पिता रोके और पिता को पुत्र रोके और शिष्य को आचार्य रोके और भृत्य को ईश्वर रोके और प्रजाओं को राजा रोके तो भी उन रुकावटों से कोई बाधा न होकर, लगातार अपने-अपने अच्छे और बुरे सभी कार्यों का फल उनको ही आयेगा न कि दूसरे लोगों को जाता है। इस सच्चाई पर विश्वास करके जीवकारुण्य शीलता का पालन करना चाहिए। इस बात को समझना चाहिए।

सचमुच भूख से पीडित जीवों को आहार देने की चिंता करते समय, इस चिंतन करनेवाले पुण्यवान का मन, अन्य किसी बन्धनों को छोड़कर शुद्धकरण होकर चिंतित होने के कारण, उन पुण्यशालियों को वास्तव में योगी के रूप में ही जानना चाहिए। आहार देने की चिंता के साथ उपचार करके देते समय, जब वे खाते हैं तब स्वयं ही खाने का अनुभव पाकर, आनंदित होने के कारण वे सचमुच ज्ञानी ही होते हैं- ऐसे समझना चाहिए। आहार देने से खाकर भूख मिट जानेवालों को, उस क्षण पर आत्मा के अन्दर और बाहर, नीचे और ऊपर, बीच में और बगल में पूर्ण रूप से करणादि सारे तत्वादि शांत होकर सारी देह पर शीतला भरकर, मुख पर प्रफुल्लित होकर, प्रकटित होनेवाले ईश्वरीय स्पष्टीकरण और तृप्ति, आनंद कहे जानेवाले ईश्वरीय आनद को प्रत्यक्ष रूप में देखकर अनुभव करते हैं। इसलिए वे पुण्यशाली लोग ईश्वर का दर्शन करके, ईश्वरीय आनंद को प्राप्त किये हुए मुक्त-जीव के रूप में ही जानना चाहिए। भूख मिटकर, खाकर प्रसन्न हुए ये लोग, इन पुण्यशालियों को ईश्वर के ही रूप में मानते हैं। इसलिए ये ही ईश्वर होते हैं- इस सच्चाई को जानना चाहिए।

सर्व शक्तिशाली ईश्वर को ही साक्षी लेकर, यह सत्य किया जा सकता है कि जीवकारुण्यशीलता का पालन करनेवाले होकर, जीवो को भूख नामक आफत से बचानेवाले उत्तम लोग, किसी भी जाति के ही क्यों न हों, और किसी भी धर्म का आचरण करनेवाले ही क्यों न हों और किसी भी पेशा करनेवाले ही क्यों न हों, वे लोग, देवता, मुनि लोग, सिद्ध लोग, योगी आदि सभी लोगों के बन्दनीय श्रेष्ठ व्यक्ति होंगे- ऐसे समझना चाहिए।

और इस जीवकारुण्य शीलता के विवरण को समरस वेद में देख सकते हैं।

तिरुच्चित्रंबलम्

शुद्ध सन्मार्ग के स्पष्टीकरण के पहले साधन
जीवकारुण्य शीलता
दूसरा भाग
आत्म सुख का जीवन

तिरुच्चिट्रंबलम्

संसार में उत्तम जन्म के रूप में कहे जानेवाले मनुष्य जन्म को प्राप्त किये हुए लोगों को, इस जन्म के द्वारा पाने योग्य आत्म सुख को इस जीवन काल में ही, शीघ्र ही जानकर प्राप्त करना चाहिए।

1. वह श्रेष्ठ आत्म सुख का जीवन कितने प्रकार के होते हैं? इसे जानना चाहिए तो-

1. इस जन्म के सुख का जीवन 2. पुनर्जन्म के सुख का जीवन, 3. ब्रह्मानन्द का जीवन के नाम से तीन प्रकार के होते हैं - ऐसा समझना चाहिए।

1. इस जन्म के सुख का जीवन

उनमें एक छोटी देह रूपी करणों को पाकर, थोडे से प्रायास करके, छोटे-छोटे विषयों का, कुछ दिनों के लिए अनुभव करनेवाले आनंद को इस जन्म के सुख के जीवन के रूप में समझना चाहिए।

इस जन्म के सुख का लाभ-

मनुष्य जन्म पर, देह और करणों पर-संसार में और भोगों में, किसी भी कमी के बिना अच्छे बुद्धिवाले होकर, भूख, रोग, हत्या आदि रुकावटों के रहित बन्धुओं, मित्रों, पड़ोसियो आदि लोगों से मिलजुलकर संततियों को प्राप्त करने योग्य सत्गुणवाली पत्नी के साथ,

कुछ दिन विषयों के सुख का अनुभव करना ही इस जन्म के सुख का लाभ होता है ऐसा जानना चाहिए।

इस जन्म के सुख को प्राप्त किये लोगों की महिमा क्या है? इसे जानना चाहिए तो -

प्रेम, दया, शीलता, संयम, सहनशीलता सत्य, पवित्रता आदि शुभगुणों को पाकर, कष्ट उठाकर, प्रयास करके विषय सुखों का अनुभव करके, कीर्ति के साथ जीवन बिताना - ऐसे ही जानना चाहिए।

2. पुनर्जन्म के सुख का जीवन

पुनर्जन्म के सुख का जीवन क्या होता है? ऐसे पूछने पर -

उच्चतम जन्म पर उन्नत देहकरणों को पाकर, बड़े प्रयत्न से ऊँचे विषयों को कई दिन अनुभव करनेवाले सुख को पुनर्जन्म के सुख के जीवन के रूप में जानना चाहिए।

पुनर्जन्म के सुख का लाभ क्या होता है? ऐसा पूछने पर -

उच्चतम जन्म पाकर, इसके पहले के जन्म के सुख के लाभ में जिन सत्गुणों को बताया गया है, उन सत्गुणों के साथ, ऊँचे स्तर पर शुद्ध विषयों को कई दिन अनुभव करने के लाभ ही पुनर्जन्म के सुख का लाभ होता है - ऐसा जानना चाहिए।

पुनर्जन्म के लाभ को प्राप्त किये हुए लोगों की महिमा क्या है?- इसका उत्तर जानना चाहें तो-

हमें यह समझना चाहिए कि प्रेम, दया आदि शुभ गुणों को पाकर शुद्ध विषय सुखों की ही चिंता करते हुए रुकावट के बिना, प्रयास करके कई दिन अनुभव करके यश के साथ जीवन बिताना ही होता है।

3. ब्रह्मानन्द जीवन

ब्रह्मानन्द जीवन क्या होता है?

सभी देहों को, सभी करणों को, सभी भुवनों को और सभी भोगो को, अपने पूर्ण प्राकृतिक स्पष्टीकरण की कृपाशक्ति की सन्निधि की विशेषता से प्रकट होकर, प्रस्तुत करनेवाले पूर्ण प्राकृतिक सच्चे स्वरूपवाले ईश्वर के पूर्ण प्राकृतिक आनंद को पाकर, किसी भी कालमें, किसी भी तरह से, जरा भी रुकावट के बिना अनुभव करनेवाले अनुपम परमानन्द के महान जीवन ही होता है- ऐसे समझना होगा।

ब्रह्मानन्द का लाभ क्या है? ऐसा पूछें तो -

स्वयं प्रकाशमान ही लाभ होता है।

ब्रह्मानन्द के लाभ को प्राप्त किये हुए लोगों की महिमा क्या है?- इसे जानना है तो-

त्वचा, नस, हड्डी, मांसपेशी, रक्त, शुक्ल आदि अशुद्ध भूतकार्य और उनके कारण होनेवाले अशुद्ध प्रकृति के अणुओं के रूपवाली देह को बदलाकर और यह बदलाव कितना हुआ इसकी जानकारी के बिना एक उच्चतम स्वर्ण के रूप के★ शुद्ध भूत कार्य शुद्ध देह को भी स्वर्ण के रूप में प्रकटित होने के अलावा आकाश की तरह स्पर्श न किये जानेवाली शुद्ध भूत करण के प्रणव देह का प्रकट होने के अलावा आकाश के समान प्रकट होनेवाली ज्ञान देह को भी प्राप्त करनेवाले होंगे।

(यह देह) अंदर से मिट्टी के कट्टापन से ग्रहण नहीं की जाती और बाहर से मिट्टी पत्थर आदियों को फेंकने पर भी अपने स्वरूप में कोई भी प्रभाव नहीं पड़ता।

अंदर जल के स्वभाव से शीतलता प्राप्त न की जायेगी और बाहर से पानी के अन्दर डुबाने पर भी उनका स्वरूप नहीं डूबेगा।

अन्दर अग्नि के ताप से गरम नहीं होंगी और बाहर से अग्नि से जलाने पर भी उस देह पर जलन और दाह का निशान भी नहीं दीख पड़ेगा।

अंदर हवा की झोंक से वे नहीं हिलेंगी और बाहर से हवा उनके स्वरूप को स्पर्श तक नहीं कर सकती।

★ **हवा से, भुवि से, गगन से**
अग्नि से, जल से, किरणादियों से
काल-मृत्यु से, रोग से, हत्या के हथियार से
ग्रह से, जन्मान्तर के निष्ठुर कार्यों से
दूसरों से कभी भी नष्ट न होनेवाली
देह देने की याचना मैं ने की
शीघ्र ही ईश्वर ने इस याचना की पूर्ति की
हे लोकवासी! यह न सोचें कि याचना तुच्छ होती।
कृपा के महान ज्योति के स्वरूप अपने पिता ईश्वर के शरण में आयें।

तिरुवरुट्पा छठा तिरुमरै-मूल गीतिका
(अर्थात् श्री रामलिंगस्वामी की कविता से)

अंदर आकाश के मिलावट से वे अंतरित नहीं होती (छिपती नहीं) और बाहर से आकाश उनकी देह को प्रभावित नहीं कर सकता।

आधार के सिवा, निराधार में भी उनकी देह संचार करेगी।

उनकी आँखें आदि ज्ञानेंद्रियाँ और वाक् आदि कर्मेंद्रियाँ देखने आदि विषयों पर और बोलने आदि विषयों पर लगाव नहीं रखतीं। यदि दया के कारण विषयों पर लगाव करना हो तो–

दीवार, पहाड़ आदि बाधाएँ उनकी आँखों को नहीं छिपा सकती; अण्ड पिण्डों में, अंदर और बाहर आदि सभी स्थानों पर रहनेवाले विषयों को उनकी आँखें अपने स्थान में रहते हुए ही देखकर समझती हैं।

अण्ड पिण्डों में कहीं भी रहकर बोलें तो भी उनके कान अपने स्थान पर रहते ही सुनकर समझते हैं।

कहीं भी रहनेवाले स्वादों को उनकी जिह्वा, अपने स्थान में रहते हुए ही स्वाद करके समझ सकती है।

कहीं भी रहनेवालों के स्पर्शों को उनकी देह, अपने स्थान में रहते हुए ही स्पर्श करके समझ सकती हैं।

कहीं भी रहनेवाली सुगंधों को अपनी नाक से, अपने स्थान में रहते हुए ही सूँधकर समझ सकती हैं।

किसी भी स्थान पर रहनेवाले लोगों को अपने हाथों से, अपने स्थान में रहते हुए ही दे सकती हैं।

किसी भी स्थान पर उनके पैर, अपने स्थान में रहते हुए ही चल सकते हैं।

उनका वाक्, किसी भी स्थान में रहनेवाले लोगो के साथ, अपने स्थान पर रहते हुए ही बोल सकते हैं, अन्य इन्द्रियाँ भी अपने स्थान पर रहते हुए ही, किसी भी स्थान के आनन्द का अनुभव कर सकती हैं।

उनका मन आदिकरण किसी तरह के विषयों पर लगाव नहीं रखता; यदि दया के कारण लगन हो तो सभी जीवों के सभी संकल्प और विकल्पों को एक ही मिनट पर एक साथ विचार करके निश्चय कर लेगा।

उनकी बुद्धि किसी भी विषय को सूचित करके नहीं जानती। यदि दया के कारण सूचित करके जानने का आरम्भ करने से सभी अंडों को और सभी जीवों को, और सभी गुणों को और सभी अनुभवों को और सभी फलों को एक साथ एक ही मिनट पर सूचित करके जानती हैं।

वे निर्गुणवादी होती हैं अथवा तामस, राजस सात्विक आदि त्रिगुणों से भी अंदर विकार नहीं होतीं, बाहर से भी उनके गुण करणों को स्पर्श तक भी नहीं करतीं।

वे अंदर प्रकृति से छिपायी नहीं जातीं और बाहर से उनकी प्रकृति को स्पर्श नहीं करतीं।

अंदर कालतत्व से कोई अंतर नहीं पड़ सकताः बाहर भी काल से उसकी देह में बाधा नहीं होगी।

अंदर नियति की नाप से नापी नहीं जातीं और बाहर की नियति से भी वे देह चित्रित नहीं की जातीं।

इसके अलावा काल, विद्या, राग, पुरुष आदि अन्य तत्वों और तत्व कार्यों आदि बातें उनको नहीं होतीं।

वे माया से भेदित नहीं की जातीं।

शुद्ध महामाया को पार करके उसके ऊपर बुद्धि स्वरूप होकर प्रकटित होती हैं।

आहार, निद्रा, मैथुन, भय आदियों से नहीं रोकी जाती हैं।

उनकी देह पर छाया, पसीना, गंदगी, बाल की सफेदी, परदा, बुढ़ापा, मृत्यु आदि दोष नहीं होंगे।

ओस, वर्षा, पवि, ग्रीष्म, आदि से और राक्षस, असुर, भूत, पिशाच आदि से भी और देवता, मुनिगण, मनुष्य, नरकवासी, मृग, पक्षी, रंगनेवाले जीव, वनस्पति आदियों से भी और किसी भी स्थान पर, किसी भी काल में उनकी देह बाधित नहीं होतीं।

तलवार, छुरी आदि अस्त्र-शस्त्रों से खंडित नहीं की जातीं।

सारे अंडकोश अणुओं की तरह छोटे दिखायी देना और सभी

अणु अंडकोशों की तरह बड़े रूप में दिखायी देना आदि उनकी देह का स्वभाव होगा।

मरे हुए लोगों को जगाना, बूढ़े लोगों को जवान बनाना आदि सिद्धयाँ और योग सिद्धियाँ और ज्ञान सिद्धियाँ आदि उनकी सन्निधि में लगातार प्रकटित होती रहती हैं।

सृष्टि करना, पालन करना, नष्ट करना, छिपाना, अनुग्रह करना आदि कृतियाँ भी सोचने पर ही घटित होती हैं।

पाँचों कर्ता लोग भी उनके कटाक्ष से अपने अपने कार्यों को चलाते हैं।

उनका ज्ञान ईश्वरीय ज्ञान होगा; उनका कार्य ईश्वर का कार्य ही होगा।

उनका अनुभव ईश्वर का अनुभव ही होगा।

सर्वशक्तिशाली होकर किसी भी काल में नाश न होनेवाले के रूप में अहंकार, माया, कर्म नामक तीन मलों (विकारों) और उन मलों के संकटों के बिना परम कारुण्य के रूप में विद्यमान होंगी।

जड़वस्तु होनेवाले एक तृण भी उनकी दिव्य दृष्टि से जीवन पाकर पंच कृत्यों को करने लगेगा।

उनका महत्व वेदांत, सिद्धांत, कालांत, बोधांत, नादांत, योगांत नामक छः अंतों में दीख पड़ता। इन सभी चीजों को पार करके भी दृष्टिगोचर होगा – ऐसे समझना चाहिए।

ये सब ब्रह्मानंद लाभ को प्राप्त किये गये लोगों की महिमा के रूप में जानना चाहिए।

2. **इन तीन प्रकार के आनंद के लाभ का जीवन कैसे प्राप्त किया जायेगा – इसे जानना है तो-**

ईश्वर की प्रकृति के स्पष्टीकरण के स्वरूप होनेवाली कृपा की सार्वभौमिकता और कृपापूर्णता को लेकर प्राप्त किया जायेगा – ऐसे समझना चाहिए।

3. **तीन प्रकार के आनंद में कृपा की संपूर्णता को लेकर पानेवाले क्या होते हैं? कृपापार्णता को लेकर प्राप्त करनेवाली बातें क्या होती हैं? – इसे जानना हो तो -**

इस जन्म के आनंद का लाभ पुनर्जन्म के आनंद का लाभ कहे जानेवाले दोनों को, कृपा की संपूणता को लेकर प्राप्त किया जायेगा। और पुनर्जन्म के आनन्द के एकमात्र लाभ को भी कृपा पूर्णता से प्राप्त किया जा सकेगा। – ऐसे ही जानना चाहिए।

4. **ईश्वर की प्रकृति के स्पष्टीकरण के स्वरूप होनेवाली कृपा किस तरीके की होगी। – इसे जानना है तो**

कहनेवाले के कहने के तरीकों और सोचनेवालों के सोचने के तरीकों और जाननेवालों के जानने के तरीकों और अनुभव करनेवालों के अनुभव करने के तरीकों आदि सर्वशक्तिवाले तरीके और अपने सार्वभौमिक तरीकों के रूप में, स्पष्ट होते हुए, स्पष्ट करके प्रकटित होनेवाले पूर्ण स्पष्ट तरीके के रूप में जानना चाहिए।

5. वह कृपा किस स्थान पर प्रकटित होती है? – इसे जानना है तो

देखनेवाले, देखने का स्थान, दिखाये जानेवाला स्थान

सुननेवाले, सुनने का स्थान, सुनाये जानेवाला स्थान

स्वाद करनेवाले, स्वाद करने का स्थान, स्वाद किये जानेवाला स्थान

सूँघनेवाले, सूँघने का स्थान, सूँघे जानेवाला स्थान

संलग्न होनेवाले, संलग्न होने का स्थान, संलग्न किये जानेवाला स्थान

बोलनेवाले, बोलने का स्थान, बोले जोने का स्थान

करनेवाले, करने का स्थान, किये जानेवाला स्थान

चलनेवाले, चलने का स्थान, चले जानेवाला स्थान

छोड़नेवाले, छोड़ने का स्थान, छोडे जानेवाला स्थान

सोचनेवाले, सोचने का स्थान, सोचे जानेवाला स्थान

विचार करनवाले, विचार करने का स्थान, विचार किये जानेवाला स्थान

साहस करनेवाले, साहस करने का स्थान, साहस किये जानेवाला स्थान

उत्तेज करनेवाले, उत्तेज करने का स्थान, उत्तेज किये जानेवाला स्थान

जाननेवाले, जानने का स्थान, जाने जानेवाला स्थान

अनुभव करनेवाले, अनुभव करने का स्थान, अनुभव किये जानेवाला स्थान

आदि किसी भी स्थानों पर, किसी भी काल में प्रकटित हो सकता है। – इसे जानना चाहिए।

6. उस कृपा को कैसे प्राप्त कर सकते हैं। – इसे जानना है तो।

जीवकारुण्य शीलता से प्राप्त कर सकते है - ऐसा समझना चाहिए।

7. जीवकारुण्य शीलता से कृपा को प्राप्त कर सकते हैं- यह कैसे? इसे जानना है तो-

कृपा तो ईश्वरीय प्राकृतिक स्पष्टीकरण अथवा ईश्वरीय दया होती है। जीवकारुण्य तो आत्माओं के प्राकृतिक स्पष्टीकरण अथवा आत्माओं की दया होती है। इससे एकमात्र करण होनेवाले छोटे स्पष्टीकरण को लेकर बड़े स्पष्टीकरण को प्राप्त करना और छोटी दया से बड़ी दया को प्राप्त करने की तरह ही होता है। – इसे जानना चाहिए।

इससे जीवकारुण्य शीलता ही सन्मार्ग होता है। ऐसे जाना जा सकता है। जीवकारुण्य प्रकट होते समय, साथ ही साथ बुद्धि और प्रेम भी प्रकट होंगे। उससे उपकार की शक्ति भी प्रकट होगी। उस उपहार शक्ति से सारी भलाइयाँ प्रस्तुत होंगी।

जीवकारुण्य का लुप्त होने पर, तुरंत ही बुद्धि और प्रेम भी लुप्त हो जायेंगे। उससे उपकार शक्ति भी लुप्त हो जायेगी। उपकार शक्ति के लुप्त हो जाने से सारी बुराइयाँ प्रस्तुत होंगी। इसलिए,

पुण्य तो एकमात्र जीवकारुण्य ही होता है और पाप तो एकमात्र जीवकारुण्य का अभाव ही होता है। ऐसे जानना चाहिए।

इसके अलावा, जीवकारुण्य शीलता से आनेवाला स्पष्टीकरण ही ईश्वर का स्पष्टीकरण होता है और इससे आनेवाला सुख ही ईश्वरीय सुख और इस स्पष्टीकरण को और सुख को चिरकाल तक समझकर, प्राप्त करके, अनुभव पाकर तृप्ति को प्राप्त किये साध्य ज्ञानी लोग ही, ऊपर कहे गये ब्रह्मानंद के लाभ को प्राप्त किये गये जीवन्मुक्त के रूप में होंगे और वे ही ईश्वर को अपनी बुद्धि से जानकर ईश्वर मय ही हो जायेंगे। इस सच्चाई को जानना चाहिए।

8. जीवकारुण्य शीलता का लक्षण क्या है - इसे जानना है तो-

जीवों को, जीव के विषय में सामान्य रूप से होनेवाले आत्म-

दयार्द्रता से, ईश्वर की आराधना करके जीवन बिताना ही तो होता है। – ऐसे जानना चाहिए।

9. जीवों के विषय में होनेवाले आत्म-दयार्द्रता से ईश्वर की आराधना कैसे की जा सकती है? – इसे जानना है तो -

जीवों को जीवों के विषय पर आम-दयार्द्रता का कारुण्य होते होते उस आत्मा के अंदर रहनेवाले ईश्वरीय स्पष्टीकरण होनेवाली कृपा प्रकटित होकर पूर्ण रूप से प्रकाशित होगी। वह श्रीकृपा (ईश्वरीय कृपा) प्रकटित होने से ईश्वरीय सुख का अनुभव होकर पूर्ण होगा। उस अनुभव का पूर्ण होना ही ईश्वर की आराधना होगी – इसे जानना चाहिए।

10. आम-दयार्द्रता होते-हते आत्मा के अंदर रहनेवाले ईश्वरीय स्पष्टीकरण की कृपा कैसे प्रकटित होगी? – इसे जानना है तो -

जिस प्रकार दही और लकड़ी को मथने के कारण, ढीलापन होते होते उसके अंदर के मक्खन और अग्नि बाहर निकलते हैं उसी प्रकार प्रकटित होगी - ऐसे समझना चाहिए।

11. श्रीकृपा (ईश्वरीय कृपा) प्रकटित होने पर ईश्वरीय सुख का अनुभव होकर कैसे पूर्ण होती है? – इसे जानना है तो -

मक्खन और अग्नि उत्पन्न होने से, उनका सच्चा स्वरूप ही अनुभव होकर जैसे पूर्णता को प्राप्त करते हैं, वैसे ही ईश्वरीय सुख भी पूर्ण होगा- ऐसे समझना चाहिए।

12. जीवों को जीवो के विषय पर आत्म-दयार्द्रता कब प्रकट होगी – इसे जानना है तो-

भूख, हत्या, रोग, आफत, प्यास, भय, अभाव, इच्छा आदि बातों से यदि जीव दुख का अनुभव करते हों तो उसे देखने पर और इस बात को सुनने पर और इस बात की जानकारी मिलने पर आत्म-

दयार्द्रता उत्पन्न होगी- इसे समझना चाहिए।

1. भूख तो – आहार न मिलने के कारण, पेट के अंदर जलकर, देह के अंदर और बाहर रहनेवाले साधनों के कारणों के स्वरूपों को जलाकर बुद्धि को दुर्बल कराके, आत्मा की प्रकटता के मूल कारण होनेवाले विकल्प माया कार्य के पिण्ड भाग की अग्नि ही होती है।

2. हत्या तो – देह के अंदर और बाहर रहनेवाले साधन के करमों को, कई तरह के साधन के करण के विच्छेद से डराकर, कलह करके, बुद्धि को दुर्बल कराके, आत्मा को बाहर निकालने का निमित्त होकर रहनेवाली, विकल्प के भूत कार्य का एक निष्ठुर कार्य होता है।

3. रोग तो – वात, (वायु) पित्त, श्लेष्म, (कफ) आदि विकल्पों के कारण परिवर्तित होकर, देह के अंदर और बाहर के साधन के करणों को दुर्बल कराके, बुद्धि को शिथिल बनाकर, आत्मा को बाहर निकालने के निमित्त के रूप में रहनेवाले विकल्प माया कार्य के पिंड भाग के विपरीत परिणाम होता है।

4. आफत तो – अहंकार से और भूलने से और कर्म के परिवर्तनों से देह भोग के अनुभवों को रोकनेवाले विघ्न होता है।

5. भय तो – देह आदि साधनों को नष्ट पहुँचानेवाले विषयों का उत्पन्न होने पर, करणों को और बुद्धि को होनेवाला कंपन होता है।

6. अभाव तो – शिक्षा, संपत्ति आदि साधनों को, अपनी स्वतंत्रता से न प्राप्त करने की स्थिति ही होता है।

7. इच्छा तो – प्राप्त करने के लिए सोचे गये विषयों की महिमा के बारे में उनको बार-बार चिंतित करानेवाली चित्तवृत्ति ही होती है। – ऐसे जानना चाहिए।

प्रथम और मध्यम और अंतिमवाले

इनमें भूख, हत्या आदि बातें, इह लोक के सुख, पुनर्जन्म के सुख, ब्रह्मानंद आदि तीनों को रोकने के कारण यह प्रथम वर्ग की रुकावट होती है और

रोग, भय, आफत, अभाव आदि बातें इस लोक के और पुनर्जन्म के सुखों को थोड़ा सा ही रोकने के कारण मध्यम वर्ग की रुकावट होती है और,

इच्छा तो इह लोक के सुख को मात्र थोड़ा सा रोकने के काण यह अंतिम वर्ग की रुकावट होती है। – ऐसे समझना चाहिए।

जीवकारुण्य का वल्लभ

13. जीवकारुण्य का वल्लभ क्या होता है? – इसे जानना है तो।

अन्य जीवों पर भूख, हत्या आदि बातों में कारुण्य शीलता जिसमें उत्पन्न होती है उससे उन जीवों के न तड़पने की रीति से, उसे दूर करने का प्रयास करना ही उसका वल्लभ कहा जायेगा – इसे समझना चाहिए।

जीवकारुण्य का प्रयोजन

14. जीवकारुण्य का प्रयोजन क्या होता है? – इसे समझना है तो

जीवों को सुख उत्पन्न करना ही उका प्रयोजन होता है – ऐसे ही समझना चाहिए।

इस जीवकारुण्य के स्वरूप, रूप, स्वभाव, व्यापकत्व आदि बातों को तीसरे भाग में देख लें।

तिरुच्चित्रंबलम

शुद्ध सन्मार्ग के स्पष्टीकरण के प्रथम साधन होनेवाली जीवकारुण्य शीलता

तीसरा भाग

जीवकारुण्य का स्वरूप आदि बातें

1. जीवकारुण्य नाम की आत्म-दयार्द्रता होने का अधिकार क्या होता है? – इसे जानना है तो-

सभी जीव एक ही स्वभाव के, ईश्वरीय प्राकृतिक सच्चाई के, सार्वभौमिक ईश्वरीय अनुग्रह की शक्ति से, भूतकार्य देहों में निमंत्रित होने के कारण, ये सभी जीव एक ही अधिकार के वर्ग के होनेवाले हैं। भाइयों में से किसी एक को कोई आफत आकर दुखी होते देखने पर और सुनने पर और जानने पर-उसकी देह को अपने अपने भाई की ही देह है – ऐसे जाननेवाले दूसरे भाई की देह पर अपना अधिकार होने की बात जानने से दयार्द्रता उत्पन्न होती है। इसी तरह कोई जीव, किसी आफत में दुखी होते देखने पर, सुनने पर, जानने पर उस जीव को अपने आत्म वर्ग ही है – ऐसा जानकर दूसरे जीव के लिए दयार्द्रता का उत्पन्न होना ही आत्म अधिकार होता है। – ऐसे जानना चाहिए।

2. जीवों के दुखी होने की स्थिति को देखने पर भी, कुछ लोग जीवकारुण्य के बिना, कठिन चित्तवाले ही होते हैं? इन लोगों को आत्म अधिकार न होने का क्या कारण हो सकता है? – इसे जानना है तो-

दुखी होनेवाले जीव तो, अपने ही आत्म वर्ग के होनेवाले हैं और वे दुखी होते हैं और दुखी होंगे आदि बातों को समझने के योग्य आत्म बुद्धि के रूप में कहे जानेवाली आँख तो अज्ञान के वश में पड़कर, प्रकाश में बहुत ही धूमिल हो जाने के कारण और उनके उपकार के रूप में रहनेवाले मन आदि उप नयनों के चश्में भी प्रकाश को प्रतिफलित करने में असमर्थ होकर मोटे हो जाने के कारण, देखकर न

समझ सके। इसलिए आत्म अधिकार होते हुए भी जीवकारुण्य के अभाव में वे रहते हैं – इसे जानना चाहिए।

3. **लेकिन यह आत्म की दयार्द्रता नामक जीवकारुण्य की सामर्थ्य कहाँ उत्पन्न होगी? – इसे जानना है तो-**

भूख, हत्या, रोग आदि बाधाओं में जिस बाधा के सम्बन्ध में जीवकारुण्य प्रकट होगा, उस बाधा की निवृत्ति करने के स्थान पर ही जीवकारुण्य की सामर्थ्य होगी – इसे जानना है।

4. **इसलिए जीवों को भूख, हत्या, रोग आदि बातों के कारण आनेवाले सारे दुख तो मन, नयन आदि करणेंद्रियों के अनुभवों का ही विषय होता है। न कि आत्मा का अनुभव। इसलिए जीवकारुण्य से कोई विशेष प्रयोजन तो नहीं है। ऐसे पूछनेवालों को क्या उत्तर होगा? – इसे जानना है तो-**

इस देह पर आत्मा और ज्ञान के ही ज्ञान होनेवाले ईश्वर के स्पष्टीकरण के अलावा, करण, इन्द्रिय आदि अन्य तत्त्वों तो मूढ़ साधन ही तो होते हैं न कि ज्ञान के रूप में होनेवाली आत्माएँ। इसलिए सुख-दुखों को, ज्ञान होनेवाली आत्मा ही तो अनुभव करती है न कि मूढ़ तत्व अनुभव करने जानते। मन आदि करण भी और आँख आदि इन्द्रियाँ, जीव के जीवन के लिए, ईश्वर की कृपा से निर्माण किये गये छोटे घर के ही साधन होते हैं। सुख-दुखों क घर के रहनेवाला ही अनुभव करेगा न कि घर के साधन होनेवाली मिट्टी, पत्थर, लकड़ी, खंभा अग्नि, नीर आदि अनुभव करना जानते।

इसके अलावा श्लेष्मा के कारण (क्षयरोग होने के कारण) आँख की रोशनी धीमी पड़कर, उपनयन कहे जानेवाले चश्मे की सहाता से देखनेवाली आँखें, दुखी विषयों को देखने पर, वे आँखें ही तो आँसू बहाती हैं; न कि चश्मा आँसू बहाता। इसलिए आत्म दृष्टि के उपनयनों के रूप में होनेवाले मन आदि साधन सुख-दुखों का अनुभव करके नहीं

जानते। इस बात को हमें समझना चाहिए।

5. **क्या ऐसा ही समझना होगा कि किसी एक जीव को, सुख घटित होने पर मन खुश होता है; दुख घटित होने पर मन शिथिल होता है। इसलिए सुख दुखों को वह मन ही अनुभव करता है – इस प्रकार प्रश्न करनेवालों को क्या उत्तर दिया जा सकता है? – इसे जानना है तो-**

स्फटिक के बने हुए गृह में रहनेवाले, गृह के स्वामी की देह का स्पष्टीकरण और देह की थकावट जैसे उस गृह में प्रतिफलित होकर बाहर प्रकटित होते हैं, और आँखों की प्रफुल्लिता और थकावट, उन आँखों के उपनयनों पर भी प्रफुल्लित होने के समान, सुख दुखों से आत्मा को उत्पन्न होनेवाली प्रफुल्लता और थकावट भी मन, आँख आदि करणेन्द्रियों पर प्रतिफलित होकर बाहर प्रकट होते हैं।

इसके अलावा, एक घर में रखा हुआ दीप, अधिक प्रकाशित होकर जलते समय, वह घर और उस घर के सभी साधनों पर पड़कर स्पष्ट दिखायी देते हैं। लेकिन उस दीप का प्रकाश कम होने पर घर और घर के साधनों की स्पष्टता भी कम हो जाती है।

इसलिए सुख दुख तो मन का अनुभव नहीं होगा बल्कि आत्मा का ही अनुभव होगा और अनुभव के लिए, आत्मा के उपकार के साधनों के रूप में मात्र ही करणेन्द्रियाँ होती हैं। इस प्रकार प्रमाणित करना ही इस प्रश्न का उत्तर होगा। इसे जानना चाहिए।

6. **ईश्वर से सृष्टित किये गये जीवों में कई जीव भूख, हत्या, रोग आदि बातों से बहुत दुखी होने का क्या कारण है? – इसे जानना है तो -**

पिछली देह में, जीवकारुण्य शीलता को चाहे बिना, उसे छोड़कर, कठोर हृदयवाले होकर, बुरे मार्ग पर चले जीव होने के

कारण, ईश्वर से विधित अनुग्रह की आज्ञा के अनुसार भूख, हत्या, रोग आदि बातों से बहुत दुखी होते हैं। – ऐसा समझना चाहिए।

7. पिछली देह होती है – यह कैसे? – इसे जानना है तो -

एक घर में किराये देकर निवास करने आये हुए एक गृहस्थ तो इसके पहले भी किसी दूसरे घर में किराये देकर निवास किया होगा और बिना घर के वह निवास नहीं कर सकता और बाद में आये हुए घर में भी कुछ संकट होने पर फिर से दूसरे घर में ही निवास करने जायेगा और यदि अपने लिए स्वतंत्र रूप से एक घर बना लेने पर, पहले की तरह किराये देकर निवास करना छोड़ देता है। इस बात को तो हम जानते हैं। ठीक इसी प्रकार, इस देह पर आहार का किराया देकर, बसने के लिए आया हुआ जीव, इसके पहले भी किसी अन्य देह पर, वह किराया देकर जीवित रहा होगा और देह के बिना जीवित नहीं रह सकता और इस देह में भी यदि कोई संकट उत्पन्न होते तो, और कोई दूसरे देह पर वास करने के लिए जायेगा और अपने लिए स्वतंत्र रूप के नित्यवाले इश्वरीय अनुग्रह की देह की प्राप्ति होने के बाद, और कोई अन्य देह पर निवास करने नहीं जायेगा – इसे जानना चाहिए।

8. कुछ लोग पिछली देह प्राप्त करने के बाद अगली देह की प्राप्ति भी नहीं करते; इस समय प्राप्त की गयी देह का नष्ट हो जाने पर, देही भी नष्ट हो जायेगा और कुछ लोग अपने पाप और पुण्यों को सदा अनुभव करते रहेंगे और कुछ लोग देह के बिना देह के नष्ट हुए स्थान पर उपस्थित रहेंगे - ऐसी बातों को लेकर कई तरह से क्यों वाद-विवाद करते हैं? – इसे जानना है तो -

कुछ लोग, 'देह ही आत्मा होती है और भोग ही मुक्ति होती हैं- ऐसे माननेवाले लोकायत मतवादियों के सिद्धांत से सम्बन्धित होने

के कारण, मूढ़ (निश्चल) होनेवाली देह पर बुद्धि रूपी एक आत्मा होती है और उसको बन्ध-मुक्ति भी होती है और मुक्ति होने के समय तक बन्ध-विकल्प के कारण भिन्न-भिन्न देहों को प्राप्त करता है और वे लोग प्रत्यक्ष-अनुमान आदि प्रमाणों से सच्चाई को न समझनेवाले होते हैं और उनके सिद्धान्त का प्रमाण और युक्ति और अनुभव उनको नहीं होता – ऐसे जानना चाहिए।

9. ऐसा नहीं है - यह कैसे? – इसे जानना है तो -

यदि जीव अपनी-अपनी सवतंत्रता से देह-भोगों को प्राप्त करते हैं तो अपनी-अपनी इच्छा के अनुसार ही अगली देहो को और भोगों को प्राप्त करना चाहिए। लेकिन ऐसा न होकर, कुछ लोग, इच्छा के अनुरूप निर्दोष अंगोंवाले और सुखों का अनुभव करनेवाले होते हैं और कुछ लोग इच्छा के विरुद्ध दोषपूर्ण अंगोंवाले और दुखों का अनुभव करनेवाले होते हैं। इसलिए जीव, देह भोगो को अपनी इच्छानुसार प्राप्त नहीं करते हैं और

ये, ये लोग, ऐसे ऐसे ही प्राप्त करना तो स्वाभाविक ही होता है- ऐसे कहें तो स्वाभाविकता तो सभी कालों पर बदले बिना एक प्रकार का ही होना चाहिए और उसी प्रकार का न होकर कई प्रकार के होने के कारण यह स्वाभाविक नहीं होगा - और

यदि इसे ईश्वर की इच्छा मानें, तो ईश्वर तो करुणा और न्याय के ही कर्ता होने के कारण, सभी जीवों को एक ही प्रकार के सुख के अनुभवो को प्राप्त करानेवाले ही होंगे। इस प्रकार, प्राप्त न होने के कारण यह तो ईश्वर की इच्छा भी नहीं है। और

ईश्वर की कृपा से सृष्टि की गयी पहली सृष्टि में, अपने स्वभाव के सुख का अनुभव करने की दृष्टि से विधित विधियों को, पुराने मल (पाप) वासना के कारण, अपने प्रयत्न का पतन होने से, उन अनादि

मल की वासना के प्रयत्न के भेदों के कारण, बाद की देह के भोग, दूसरी सृष्टि में उत्पन्न होता है – आदि बातों को प्रमाणित रूप से समझना चाहिए।

प्राप्त की गयी देह के छूटने पर कई कई अन्य देहों को लेते नहीं हैं- ऐसे यदि मानें तो – पहली सृष्टि से लेकर अब तक नष्ट हुई देहो की गिनती असंख्य होती है; उसी प्रकार आत्मा भी असीमित होती हैं- इसलिए आगे से आत्माएँ देहों की प्राप्ति नहीं करनी चाहिए। लेकिन ऐसा नहीं होता है। देहों की प्राप्ति करती ही रहती हैं। इसलिए आत्माओं को नूतन रूप में बनाकर, अपने लिए नूतन देहों को मंगायें तो – वे नूतन-नूतन देह मात्र ही बना सकती हैं। देह के अंदर रहनेवाली आत्मा को नूतन रूप से नहीं की जाती हैं।

आत्मा

आत्मा सभी काल में होते हुए प्रकटित हुई है – उसकी उत्पत्ति होना और मिट जाना आदि नहीं होता – उसे बनाया या मिटाया नहीं जा सकता है। यदि आत्माओं को घड़े के रूप में बनाये जाते हैं ऐसे मानें तो वे तो सुख दुखों का अनुभव करना नहीं जानतीं। पुण्य-पापों को भी प्राप्त नहीं करेंगी- घडे मिट जाने की तरह यह भी मिट जाएगी। इस प्रकार मिट जाने पर बन्ध मुक्ति भी नहीं होगी और पुण्य-पाप भी नहीं होंगे। इसलिए घड़े के टूट जाने पर घड़े के अन्दर रहनेवाली हवा और आकाश के न टूटने की बात को तो छोटे बालकें भी जानते हैं। इसलिए देह का नष्ट होनेपर, देह के अंदर रहनेवाली आत्मा का स्पष्टीकरण और ईश्वर का स्पष्टीकरण का नष्ट नहीं होगा और आत्मा अपने प्रयत्न भेदों से देह के भोग भेदों को प्राप्त करना तो सत्य ही है और इस बात को युक्ति पूर्वक जानना चाहिए।

एक माँ-बाप को एक ही समय पर जुड़वाँ बेटों का जन्म होता

है। उनमें से एक बच्चा गोरा है; एक बच्चा काला है। एक बच्चा अंगहीन होता है; एक बच्चा स्वस्थ अंगवाला होता है। एक बच्चा दूध पीता है; एक बच्चा दूध पीने में शोर मचाता है। एक बच्चा रोगी होता है। एक बच्चा निरोगी होता है। एक बच्चा, दो साल की आयु में बोलने लगता है; एक बच्चा बोलना नहीं जानता। इन जुड़वाँ बच्चों को ऐसा भेद होकर, यहाँ पर किसी भी कारण के बिना आयी हुई बातों को गौर से यदि विचार करें तो, यह हमें ज्ञात होगा कि पिछले जन्म पर ली गयी देह के कर्म के प्रयत्न भेद ही होगा और इन जुड़वाँ बच्चों को, तीन साल की आयु में, खेलते समय, अलग अलग रूप से माँ-बाप से दिये गये नाश्ते को लेकर खाते समय, इन दो बच्चों के अलावा कोई एक अन्य बच्चे के आने पर उसे देखकर, इन दोनों में से एक बच्चा अपने हाथ के नाश्ते को देता है और दूसरा बच्चा तो उसे देने से रोकता है। एक बच्चा पुस्तक लेकर, एक बालक पढ़ने की तरह पढ़ता है; दूसरा बच्चा उस पुस्तक को छीनकर फेंकते हुए उसे पढ़ने न देकर, मारता है। एक बच्चा डरता है; दूसरा बच्चा निडर होकर रहता है।—इसी प्रकार इन बच्चों को दया, प्रेम, बुद्धि, कर्म आदि बातें अपने माँ-बापों के द्वारा न सिखाये जाने पर भी, अपने-आप ही होते और न होते हुए यह स्वभाव कैसे आया हुआ है? इस बात का विचार करने लगें तो, इन दोनों बच्चों के पूर्व-जन्म की देह की वासना ही, इस जन्म की देह पर, बिना सिखाये ही आया हुआ है इस बात को अनुभव से जानकर समझना चाहिए। ऐसे समझने पर, जीवों की पिछली और बाद की भी देह होने की बात को अच्छी तरह से हम जान सकते हैं। इस प्रकार न समझने के कारण ही कुछ लोग यह कहते हैं कि अगला जन्म नहीं होता। इस बात को हमें जानना चाहिए।

इसके अलावा इस स्थूल देह का नष्ट न होते समय ही, स्वप्न में आत्मा भिन्न-भिन्न देहों को लेकर, भिन्न-भिन्न विचित्रों का अनुभव करती है तो, इस देह का नष्ट होने पर, दूसरी देह को लेकर, वासनाओं

के अनुसार के अनुभवों का अनुभव प्राप्त करेगी – इस बात को बताने की आवश्यकता ही नहीं पड़ती।

इसके अतिरिक्त, सिद्धि विशेषता के कारण इस देह से, कोई इस देह को छोड़कर दूसरी देह पर यदि प्रवेश करता है तो, इस देह का नष्ट होते समय, इस देह की आत्मा कर्म भेद के कारण दूसरी देह पर प्रवेश करेगी- ऐसे बताने की भी आवश्यकता नहीं पड़ती।

इसके अलावा एक पक्षी काल भेद के कारण और गुण भेद के कारण पहले अंडे के रूप की एक देह से, बाद में चूजा (पक्षी का बच्चा) के रूप के एक देह होने के कारण, आत्मा काल भेद से इस देह से दूसरे देह पर आती है – ऐसे कहने की आवश्यकता नहीं होती।

इसके अलावा बर्र से एक कृमि कीडे के रूप की देह से बर्र के रूप की देह पर आता है तो कर्म के कारण एक आत्मा, एक देह से दूसरी देह पर आती है। इसे कहने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

इसके अतिरिक्त एक आत्मा, एक ही जन्म पर स्वयं शिशु की देह से बाल देह पर और बाल देह से यौवन देह पर और यौवन देह से वृद्ध देह पर भी आती है तो वह आत्मा कर्म भेद के कारण दूसरी पिण्ड देह पर भी आयेगी – इस बात को कहने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

इसके अलावा मंत्र तंत्र भेद से एक जन्म पर स्वयं स्त्री देह से पुरुष देह पर और पुरुष देह से स्त्री देह पर आत्मायें आयेंगी तो कर्म भेद से दूसरी देह को लेती हैं – इस बात को कहने की आवश्यकता नहीं पड़ती।*

---

*श्री मु. कन्दस्वामी जी के तिरुवरुट्पा के प्रकाशन पर (1924) यहाँ तक ही विद्यमान है; इसके आगे नहीं है।

इसके अतिरिक्त एक वनस्पति देह पर रहनेवाली आत्मा उस देह में ही स्वयं मरकत कृमि नामक कीडे की देह पर आती है। इसके अलावा चींटी उस देह में से ही पिपिलिका पक्षी नामक देह पर आती है।

इसके अलावा एक साँप, उस देह से ही सर्प पक्षी नामक एक अन्य देह पर आता है। इसी प्रकार मनुष्य, जानवर, पक्षी, रेंगनेवाले जल में जीनेवाले प्राणी, वनस्पति आदि उन उन देहों पर रहनेवाली आत्मायें उन उन देहों से अन्य देहों को लेती हैं तो उन उन देहों के नष्ट होने पर अन्य देहों को प्राप्त करेंगी- इस बात को कहने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

10. कुछ लोग कहते हैं कि सचमुच पिछली देह होती तो उस देह में आप कौन थे? आपके उस जीवन का परिचय क्या है? आदि बातें बताइए। इस प्रकार के उनके प्रश्न का उत्तर क्या है? – इसे जानना है तो-

सत्तर आयुवाले किसी एक व्यक्ति को देखकर, ''आप के पाँच साल की आयु के जीवन का चरित्र कैसा था?" ऐसे पूछने पर तो वह कहता है कि ''कल बीते हुए जीवन के परचिय को आज की अवस्था में तो, उसके बारे में कहना न जानकर, मेरी आँखों पर पर्दा पड़े रहने पर, मेरे पाँच साल की आयु के जीवन परिचय को कैसे बता सकता हूँ? और इस प्रश्न को तुम कैसे पूछ सकते हो?" "एक ही जन्म पर घटित अपने चरित्रों को ही अवस्था भेदों के कारण, जानकर न बता सकते हुए चकित होता है तो, पिछली देह पर घटित चरित्रों को, अनेक अवस्थाओं के कारण चकित होकर रहनेवाले हम कैसे जानकर बता सकते हैं"। – यही इसका उत्तर होगा। – ऐसे समझना चाहिए।*

*चेन्नै सन्मार्ग संघ के तिरुवरुट्पा प्रकाशन पर यहाँ तक ही विद्यमान है। इसके आगे की हाते तो केवल श्री बालकृष्ण पिळ्ळै के प्रकाशन पर ही विद्यमान है।

पिछली देह पर जीवों के द्वारा किये गये पुण्य-पाप कर्म आदि इस देह पर भी आयेगी। यह कैसे हो सकता है? – इसे जानना है तो-

एक गृहस्थ किराये पर पहले निवास किये गये घर में, बुरे चाल-चलनवाले लोगों को बुलाकर, उनके साथ व्यवहार करने की आदत बना लिया होता तो, वह गृहस्थ उस घर को छोड़कर दूसरे घर में निवास करते समय भी बुरे चाल-चलनेवाले वे लोग, इस घर में भी आकर उसके साथ व्यवहार करेंगे। ठीक इसी प्रकार एक जीव यदि पहले जीवित देह पर पाप के कर्मों को अपनी इच्छा से किया हुआ होता तो, वह जीव दूसरी देह पर आते समय, वे पाप के कर्म इस देह में भी आकर उस जीव तक पहुँचेंगे और पुण्य कर्म भी इसी प्रकार ही होगा – ऐसे जाना चाहिए।

पिछले जन्म पर, जीवकारुण्यशीलता को छोड़कर, बुरे मार्ग पर चले जीवों को इस जन्म पर भूख, प्यास आदियों से दुखी होने देना ईश्वर की कारुणिक आज्ञा की नियति होने से, उन जीवों के विषयों पर दया दिखाकर, आहारादि देकर उनके दुख को बदलना तो क्या ईश्वर की कारुणिक आज्ञा के विरुद्ध ही तो होगा? इस छोटे से प्रश्न का उत्तर जानना है तो-

राजा अपनी आज्ञा के, पूर्ण रूप से विरुद्ध होकर, पैरों पर जंजीर डालकर कारागार में रहनेवाले बड़े से बड़े अपराधियों को अपने सेवकों के द्वारा आहार दिलाता है।

उसी प्रकार, ईश्वर अपनी आज्ञा को पूर्ण रूप से विरोध करके, कई तरह के बन्धों को बनवाकर, नरक में रहनेवाले पापियों को भी अपने परिवार-देवताओं के द्वारा आहार दिलाते हैं।

राजा, अपनी आज्ञा के अनुसार न चलकर भिन्न प्रकार के साधारण अपराधियों को, अपने द्वारा प्राप्त होनेवाले लाभ को रोककर,

उद्योग से भी निकालकर, उनको सही बुद्धि आने के उद्देश से, उस स्थान से दूसरे स्थान पर भेजता है। वे अपने उद्योग खो जाने के कारण, सुख-भोजन आदि भोगों को खोकर, गाँव के बाहर जाकर आहार आदि को पाने के लिए घूम-घूमकर दुखी होते हैं। उस समय दयावान लोग देखकर, यदि उन्हें आहार आदि देते हैं तो उसे राजा देखने पर भी और सुनने पर भी, आहार दिये लोगों को दयाशीलवाले अच्छे गृहस्थ मानकर, खुश होकर उन्हें उन्नत स्थान पर रखकर उपचार ही करता है न कि नाराज होता है।

उसी प्रकार ईश्वर, अपनी आज्ञा के अनुसार न चलनेवाले साधारण अपराध के जीवों को, अपनी शक्ति से उन लोगों के पाने योग्य सुखों को प्राप्त न होने की दृष्टि से, उनके द्वारा दिये गये सुखमय भुवन-भोगों को छुड़ाकर, उन जीवों को सत्बुद्धि लाने के उद्देश्य से, उस देह से निकालकर दूसरी देह पर जाने देते हैं। वे जीव, सुखमय भुवन-भोगों को खो जाने के कारण, सुखमय भोजनादियों को भी खोकर कई अन्य जगहों पर आहार न मिलने के कारण दुखी होते समय, यदि दयावान लोग उनके दुख को देखकर आहार आदि देते हैं तो (ईश्वर) ऐसे देनेवालों को अच्छे दयालुवाले मानकर, "ये लोग लगातार सुख की प्राप्ति करें"– ऐसा सोचकर खुश होकर, उन लोगों को ऊँचे स्थान में रखकर उपचार ही तो करेंगे न कि नाराज होंगे।

इसलिए ईश्वरीय कारुणिक आज्ञा को, जीवों पर जीव दया करके उपचार करना ही स्वीकृत होता है। इस सच्चाई को जानकर कहना ही इसका उत्तर होगा। ऐसे समझना चाहिए।

इस जीवकारुण्य शीलता से इहलोक की शीलता दिखायी देती है। नहीं तो, इहलोक की शीलता जरा भी नहीं दीख पड़ेगी। जीवकारुण्य के न होने पर बुद्धि और प्रेम भी उत्पन्न नहीं होंगे।

उनका उत्पन्न न होने पर उनकी दृष्टि और एकता और उपकार आदि भी उत्पन्न नहीं होंगे। वे प्रकट न होने के कारण, बलवान जीवों से दुर्बल जीव शीलता, ईर्ष्या आदियों से रुकावट होकर नष्ट हो जायेंगे। इसके बाद बलवान जीव की शीलतायें घमंड के कारण, तामस शीलतावाले होकर, बदलकर नष्ट हो जायेंगे। जरा सा भी जीवकारुण्यशीलता के न होनेवाले बाघ, सिंह आदि जानवर जीवित रहनेवाले जंगल में, इह लोक की शीलता तो नहीं दीख पड़ती। जीवकारुण्य के अभाव में रहनेवाले मनुष्य जीवित रहनेवाले स्थान पर भी इह लोक की शीलता भी नहीं दीख पड़ेगी। – ऐसे जानना चाहिए।

पर लोक की शीलता भी जीवकारुण्य से ही प्रचलित होती है। उसके बिना परलोक की शीलता भी प्रकटित नहीं हो सकती। जीवकारुण्य के न रहने पर कृपा का स्पष्टीकरण का उत्पन्न नहीं होगा।

उसके उत्पन्न न होने से, ईश्वरीय-पद की प्राप्ति नहीं मिल सकती। उसके न मिलने के कारण, मुक्ति के आनंद को कोई भी नहीं पा सकते। इसे प्राप्त न करने के पक्ष में तो, पर लोक की शीलता तो प्रचलित ही नहीं हो सकती है। इस बात को जानना होगा।

जीवकारुण्य शीलता का अधिकार पालन न किये जाने के कारण, दुष्ट-जन्मों की ही वृद्धि होकर बुरे आचार ही बहुत प्रचलित होते हैं। पिछली देह पर जीवकारुण्य के अभाव के सभी पाप जीव-अपने-अपने पापों के आचरण के अनुसार कुछ लोग नरकवासी और कुछ लोग समुद्रवासी और कुछ लोग अरण्यवासी होते और, कुछ लोग बाघ, भालू, सिंह, याळि, (सिंह मुख का एक जानवर), हाथी, बकरा, सुअर, कुत्ता, बिल्ली आदि दुष्ट जानवर होते और,

कुछ लोग कौआ, गृद्ध आदि पक्षी आदि चंडाल होते, और कुछ लोग साँप, बिच्छू आदि दुष्ट जन्मों के रूप में होते, और कुछ लोग

मगरमच्छ (एक प्रकार भयंकर बड़ी मछली) आदि कठोर जन्तुओं के रूप में होते है, और कुछ लोग कुचिला, (इन्ट्रायण एक प्रकार की कडुवी सब्जी) नागफनी (एक कंटक पौधा) आदि अशुद्ध वनस्पति होकर जन्म लेते हैं। इसलिए दुराचार ही अधिक प्रचलित होते हैं ऐसे समझना चाहिए।

जीवकारुण्य तो, ईश्वर की कृपा को प्राप्त करने का मुख्य साधन होने के अलावा, उस कृपा का सार्वभौमिक स्पष्टीकरण भी होता है और जीवकारुण्य आत्माओं के प्राकृतिक स्पष्टीकरण होने के कारण, वह प्राकृतिक स्पष्टीकरण के न होनेवाले जीवों को ईश्वर का स्पष्टीकरण, मन के अन्दर से और बाहर से भी नहीं प्रकटित हो सकता है- ऐसे जानना चाहिए।

जीवकारुण्य का लक्ष्य क्या होता है? इसे जानना है तो

सभी आत्माएँ, प्राकृतिक सत्य के सार्वभौमिक होकर और प्राकृतिक स्पष्टीकरण की कृपा, ज्ञान के भी ज्ञान के रूप में प्रकटित होने के लिए, एकता के अधिकार के स्थान भी होते हैं और वे आत्माएँ जीवों के रूप में बढ़ने के लिए, भूत कार्य की देह ही अधिकारी होती हैं और उन देहों पर आत्माएँ जीवों के रूप में बढ़ने से आत्म स्पष्टीकरण लुप्त हो जायेगा और वह लुप्त होने से कृपा का स्पष्टीकरण भी लुप्त हो जायेगा। और उसके लुप्त हो जाने से कृपा का स्पष्टीकरण प्रकट नहीं होगा और वह प्रकट न होने पर स्तब्ध हो जायेगा और वही आत्माओं का बन्धन हो जाता है और उसके लिए भूतकार्य देह की आवश्यकता पड़ती है और भूतकार्य देहों का मूल कारण माया ही होता है, और माया के विकल्प जादुओं के रूपवाले भूख, हत्या, प्यास, रोग, आफत, भय, अभाव, इच्छा आदियों से उन देहों को बार-बार खतराओं की संभावना होगी और उस प्रकार के खतरे न होने की दृष्टि से करणेन्द्रियों की सहायताओं को प्राप्त की गयी अपनी बुद्धि से, बड़ी सावधानी के

साथ प्रयत्न करके उन्हें रोकने के योग्य स्वतंत्रता, जीवों को, ईश्वरीय कृपा के द्वारा दी गयी है और उस स्वतंत्रता की सहायता से सभी जीव अपनी देहों से खतरों को दूर करके, आत्म लाभ प्राप्त करने का प्रयास करनेवाले होते हैं और ऊपर बताए गये भूख, हत्या, प्यास, रोग, आफत, भय, अभाव, इच्छा आदि बातों से आनेवाली खतराओं की निवृत्ति कर लेने के योग्य स्वतंत्रता के न होते दुखी जीवों के विषय पर उनकी निवृत्ति करने के योग्य स्वतंत्रता के होनेवाले जीव, अपने कारुण्य से निवृत्ति करवाना चाहिए और

उस प्रकार निवृत्ति करने में भूख से और हत्या से आनेवाले दुखों की निवृत्ति करवाना तो प्राधान कारुण्य होगा और उसके सिवा अन्य बातों से आनेवाले दुखों को बदलाना तो अपर जीवकारुण्य होगा और, वह केवल इस लोक के सुख मात्र को ही जरा सा दे सकता है और, भूख से आनेवाले दुख और हत्या से आनेवाले दुख की निवृत्ति करवाना तो पर जीवकारुण्य होगा और इससे इस लोक के सभी सुख और असीमित सिद्धि के सुखों को और, किसी भी काल पर नाश न होने वाले मुक्ति के सुखों को, ईश्वरीय कृपा के द्वारा प्राप्त की जायेंगी और,

अन्य जीवों को होनेवाली, ऊपर के बतायी गयी आफतों की निवृत्ति करवाने के योग्य स्वतंत्रता और बुद्दि के होने पर भी, उस प्रकार न करके वंचित लोगों को इस लोक का सुख, उस लोक के सुख के साथ, मोक्ष के आनन्द का अनुभव करने की स्वतंत्रता नहीं प्राप्त की जाती है और वर्तमान काल मे अनुभव करनेवाले भुवन भोग की स्वतंत्रता को भी खो देंगे और ईश्वर की कृपा से विधित होने के कारण आफतों की निवृत्ति करने योग्य बुद्धि और स्वतंत्रता न होनेवाले जीवो के विषय पर, उनकी निवृत्ति करवाने के योग्य बुद्धि और स्वतंत्रता होनेवाले लोग वंचित न करके निवृत्ति करवाना ही जीवकारुण्य का लक्ष्य होता है – ऐसे जानना चाहिए।

भूख, हत्या, प्यास, रोग, आफत, भय, अभाव, इच्छा आदि बातों से आनेवाली आफत की निवृत्ति करवाना जीवकारुण्य का लक्ष्य होने पर, यहाँ भूख से और हत्या से आनेवाली आफतों को मात्र निवृत्ति करवाना तो प्रधान कारुण्य होता है – ऐसे क्यों बताया गया है – इसे जानना है तो-

जीवकारुण्य शीलता के, "पर जीवकारुण्य और अपर जीवकारुण्य" नाम के दो प्रकार होते हैं। उनमें भूख मिटाना और हत्या हटाना आदि "पर जीवकारुण्य" होता है। बाकी सब "अपर जीवकारुण्य" होते हैं। इसलिए पर जीवकारुण्य को विशेष रूप से बताया गया है। इस प्रकार से जानना चाहिए। इसके अलावा भूख से पीड़ित जीवों को, भूख की निवृत्ति करवाने की दया रखनेवाले लोग, प्यास बुझाने के लिए पानी न देनेवाले नहीं होते हैं। और पानी देने के लिए कोई प्रयास करने की भी आवश्यकता नहीं पड़ती। पानी तो झील, तालाब, नहर आदि स्थानों में उपस्थित होता है।

इसका सिलसिला अति शीघ्रता से प्रकट होने के लिए ईश्वर कृपा करें।

तिरुच्चिट्रंबलम

மொழிபொயர்ப்பாளர்

SMP. *அருள்வாசகம்,* B.A., (ESM.)

2/122A, ஜோதி நகர், நக்கீரர் தெரு,

செம்பனார்கோயில்-VILL. & POST-609 309

மயிலாடுதுரை-DIST.

Translator :-

SMP. ARULVASAGAM, B.A., ESM.

2/212A, JOTHI NAGAR, NAKIRAR STREET,

SEMBANARKOIL-VILL. & POST-609 309

MAYILADUTHURAI DIST; **CELL: 9788205853.**

Brief Life History of Vallalar
वल्लल पेरुमान का इतिहासिक अंकित

वास्तविक नाम	:	**इरामलिंगम**
विशेष नाम	:	श्री अरुट्प्रकाश वल्ललार
अवतार	:	05-10-1823 शुभानु वर्ष, भाद्रपद-21, इतवार चैक्ष नक्षत्र, (शाम के 5.54)
जन्म स्थान	:	मरुदूर, कडलूर-जिला
माँ-बाप	:	इरामैया-चिन्नंमैयार
सहोदर व सहोदरी	:	सबापति, परशुरामर, सुंदरांपाल, उन्नामुत्तैयंपाल
वास स्थान	:	मरुदूर - 1823-1825
		चेन्नै - 1825-1858
		करुंकुषि - 1858-1867
		वडलूर - 1867-1870
		मेट्टुक्कुप्पम - 1870-1874
प्रकट किये किताबों	:	ओषिविल ओडुक्कुम - 1851
		दोण्डैमण्डल सदगम - 1855
		शिन्मय दीपिगै - 1867
रचाये किताबों	:	मनुमुरैकण्डवासगम - 1854
		जीवकारुण्य ओषुक्कम -1867
अनुग्रह किये पद्य	:	श्री अरुट्पा (छः विशिष्टतावाला)
निर्माण किये निलय	:	सत्य सन्मार्ग संघ - 1865
		सत्य धर्मशाला - 1867
		सिद्धि वलागम - 1870
		सत्य ज्ञान सभै - 1872
सिद्धि		
(ज्योति स्वरूप होना)	:	मेट्टुक्कुप्पम में 30-01-1874
(त्रि-देह सिद्धि)		श्रीमुख वर्ष, पूस नक्षत्र, शुक्रवार
		रात 12.00 बजे